साान्ध्य हिन्दी दैनिक

जौनपुर से प्रकाशित

देश की उपासना

देश के विकास में समर्पित समाज के सभी वर्गों के लिए

वर्ष - 03 | अंक - 64 | जौनपुर, मंगलवार, 22 अक्टूबर 2024 | साान्ध्य दैनिक (संस्करण) | पेज - 4 | मूल्य - 2 रूपये

संक्षिप्त खबरें

अखिलेश की मौजूदगी में तेज प्रताप ने किया नामांकन

लखनऊ, संवाददाता। समाजवादी पार्टी के मैनपुरी की करहल विधानसभा सीट से प्रत्याशी तेज प्रताप सिंह यादव ने सपा प्रमुख अखिलेश यादव, सांसद डिम्पल यादव एवं मुलायम कुनबे के कई सदस्यों की मौजूदगी में नामांकन किया। सपा नेता तेज प्रताप सिंह यादव ने अपना राजनीतिक कॅरियर साल 2004 में क्षेत्र पंचायत सदस्य के रूप में किया था। तेज प्रताप सिंह यादव सपा संरक्षक मुलायम सिंह यादव के बड़े भाई रतन सिंह यादव के नाती हैं। तेज प्रताप के पिता रणवीर सिंह यादव सैफई महोत्सव के संस्थापक रहे हैं। साल 2002 में रणवीर सिंह यादव का निधन होने के बाद तेज प्रताप ने उनकी कमान संभाली। 21 नवंबर 1987 को जन्मे तेज प्रताप सिंह यादव दिल्ली के डीपीएस यानी दिल्ली पब्लिक स्कूल से शुरुआती पढ़ाई की है।

राष्ट्रपति मुर्मू मंगलवार को राष्ट्रीय जल पुरस्कार, 2023 प्रदान करेंगी

नई दिल्ली, एजेंसी। राष्ट्रपति द्रौपदी मुर्मू देश भर में जल प्रबंधन और संरक्षण में उत्कृष्ट योगदान के लिए मंगलवार को राष्ट्रीय जल पुरस्कार, 2023 प्रदान करेंगी। एक आधिकारिक बयान के अनुसार, जल शक्ति मंत्रालय के तहत जल संसाधन, नदी विकास एवं गंगा संरक्षण विभाग (डीओडब्ल्यूआर, आरडी एंड जीआर) द्वारा ये पुरस्कार दिए जाते हैं, जिसमें सर्वश्रेष्ठ राज्य से लेकर सर्वश्रेष्ठ नागरिक समाज तक की नौ श्रेणियों में प्रयासों को सम्मानित किया जाता है। पुरस्कारों के पांचवें संस्करण में, ओडिशा ने सर्वश्रेष्ठ राज्य श्रेणी में पहला पुरस्कार हासिल किया है, जबकि उत्तर प्रदेश दूसरे स्थान पर है। गुजरात और पुडुचेरी ने संयुक्त रूप से तीसरा स्थान हासिल किया है। इन पुरस्कारों में प्रशस्ति पत्र, ट्रॉफी और कुछ श्रेणियों में नकद राशि शामिल हैं, जिनमें संयुक्त प्राप्तकर्ताओं सहित कुल 38 विजेताओं को सम्मानित किया जाता है।

प्रियंका गांधी वायनाड सीट से करेंगी नामांकन

नई दिल्ली, एजेसी। वायनाड लोकसभा सीट से कांग्रेस प्रत्याशी प्रियंका गांधी वाड्रा नामांकन पत्र दाखिल करेंगी। वह कलपेट्टा में रिटर्निंग ऑफिसर के सामने नामांकन करेंगी। इस अवसर पर कांग्रेस के राष्ट्रीय अध्यक्ष मल्लिकार्जुन खड़गे, कांग्रेस नेता सोनिया गांधी और नेता प्रतिपक्ष राहुल गांधी सहित कई अन्य नेता मौजूद रहेंगे। नामांकन पत्र दाखिल करने से पहले प्रियंका गांधी वाड्रा और राहुल गांधी कलपेट्टा नया बस स्टैंड पर सुबह 11 बजे रोड शो करेंगे। इस रोड शो के जरिए वह शक्ति प्रदर्शन करेंगे। इसके बाद कलेक्टर के सामने प्रियंका गांधी वाड्रा अपना नामांकन पत्र दाखिल करेंगी। वायनाड लोकसभा सीट पर 13 नवंबर को उपचुनाव होगा और नतीजों की घोषणा 23 नवंबर को होगी। बता दें कि कांग्रेस नेता राहुल गांधी लोकसभा चुनाव 2024 में वायनाड और रायबरेली से चुनाव जीतने में सफल रहे थे। इसके बाद उन्होंने वायनाड से इस्तीफा दे दिया और रायबरेली से सांसद बने रहने का फैसला किया। रायबरेली गांधी परिवार की परंपरागत सीट है। 2019 के लोकसभा चुनाव में भी कांग्रेस नेता राहुल गांधी ने दो लोकसभा सीटों पर चुनाव लड़ा था।

दुनिया में मची उथल-पुथल के बीच भारत उम्मीद की किरण बना - प्रधानमंत्री मोदी

नयी दिल्ली, एजेंसी। प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी ने आज एनडीटीवी वर्ल्ड समिट में वैश्विक स्तर पर भारत के उदय के बारे में बात की। उन्होंने बताया कि 21वीं सदी श्भारत की सदीश क्यों है, देश किस तरह तेजी से आगे बढ़ रहा है और दुनिया भर के निवेशक भारत के सबसे तेजी से बढ़ती प्रमुख अर्थव्यवस्था बनने को लेकर कैसे उत्साहित हैं। एनडीटीवी वर्ल्ड को लॉन्च करते हुए पीएम मोदी ने भारत के विकास की गति और गति के बारे में बात की। प्रधानमंत्री ने कहा, श्भारत की तेज वृद्धि – दुनिया में सबसे तेज – और देश में बुनियादी ढांचे के निर्माण को देखते हुए, कई वैश्विक रेटिंग एजेंसियों ने भारत के विकास के पूर्वानुमान को अपग्रेड किया है। उन्होंने आगे कहा कि दुनिया भर के निवेशक भारत के विकास पर उत्सुकता से नजर रख रहे हैं और सबसे तेजी से बढ़ते बाजार में निवेश करने को लेकर उत्साहित हैं। प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी ने भारत को एक उभरती हुई शक्ति करार देते हुए सोमवार को कहा कि ऐसे समय में जब दुनिया में उथल–पुथल मची हुई है, वह उम्मीद की एक किरण बना है तथा आशा का संचार कर रहा है।

समाचार चौनल एनडीटीवी की ओर से आयोजित एक सम्मेलन को संबोधित करते हुए मोदी ने यह भी कहा कि भारत हर क्षेत्र में तेजी से विकास कर रहा है और इसका पैमाना अप्रत्याशित है। उन्होंने कहा, आज जब चर्चा का केंद्र चिंता ही है, तब भारत में चर्चा का विषय है भारत की शताब्दी। दुनिया में मची उथल–पुथल के बीच भारत उम्मीद की एक किरण बना है। जब दुनिया चिंता में डूबी है, तब भारत आशा का संचार कर रहा है। मोदी ने कहा कि हालांकि भारत की अपनी चिंताएं हैं, लेकिन इसमें सकारात्मकता की भावना है जो सभी भारत के लिए महसूस भी करते हैं। उन्होंने कहा, भारत आज एक विकासशील देश भी है और उभरती हुई शक्ति भी है। हम गरीबी की चुनौतियां भी समझते हैं और प्रगति का रास्ता बनाना भी जानते हैं। हमारी सरकार तेजी से नीतियां बना रही है, निर्णय ले रही है, नए सुधार कर रही है। उन्होंने कहा, आज भारत हर सेक्टर में, हर क्षेत्र में जिस तेजी से काम कर रहा है, वह अभूतपूर्व है। भारत की गति, भारत का पैमाना अप्रत्याशित है। प्रधानमंत्री ने अपने तीसरे कार्यकाल के शुरुआती 125 दिनों में किए गए विभिन्न कार्यों का उल्लेख करते हुए कहा कि अब भारत भविष्य की सोच के साथ आगे बढ़ रहा है।

स्वतंत्रता आंदोलन के भूले–बिसरे नायकों की भूमिका को उजागर करें अगली पीढ़ी के इतिहासकार – उपराष्ट्रपति

अलीगढ़, संवाददाता। उप राष्ट्रपति जगदीप धनखड़ ने कहा कि अगली पीढ़ी के इतिहासकारों को भारत के स्वाधीनता आंदोलन के भूले–बिसरे नायकों की भूमिका को उजागर करना चाहिए। उप राष्ट्रपति ने अलीगढ़ स्थित राजा महेन्द्र प्रताप विश्वविद्यालय के प्रथम दीक्षांत समारोह को संबोधित करते हुए कहा कि यह विश्वविद्यालय एक ऐसी हस्ती की याद में स्थापित किया गया है जो ''वास्तव में भारत के स्वाधीनता आंदोलन के भूले–बिसरे नायक हैं। उन्होंने आह्वान करते हुए कहा, ''अगली पीढ़ी के इतिहासकारों को भारत के स्वाधीनता आंदोलन के ऐसे नायकों की भूमिका को उजागर करना चाहिये जिन्हें समय के साथ भुला दिया गया है।'' धनखड़ ने कहा, ''राजा महेन्द्र प्रताप 20वीं सदी के महान स्वतंत्रता सेनानी थे। उन्होंने भारत की आजादी और देश में आधुनिक शिक्षा के लिये अपना पूरा जीवन समर्पित कर दिया। उनके नाम पर विश्वविद्यालय स्थापित किया जाना उन्हें सच्ची श्रद्धांजलि है। उन्होंने कहा, ''राजा महेन्द्र प्रताप वर्ष 1915 में काबुल में निर्वासन में बनी भारत की पहली अस्थायी सरकार के संस्थापक थे। अपनी जिंदगी का एक लंबा समय निर्वासन में गुजारने वाले राजा महेन्द्र प्रताप भारत की आजादी के लिये निरंतर संघर्ष करते रहे।'' उप राष्ट्रपति ने कहा, ''राजा महेन्द्र प्रताप आधुनिक शिक्षा के भी बड़े पैरोकार थे। उन्होंने मथुरा में प्रेम महाविद्यालय नाम से एक शिक्षण संस्थान स्थापित किया था और उन्होंने इसके लिये काफी जमीन भी दान की थी।

मुख्यमंत्री सैनी ने जेपी नड्डा से मुलाकात किया

हरियाणा के मुख्यमंत्री नायब सिंह सैनी ने सोमवार को दिल्ली में भारतीय जनता पार्टी (भाजपा) के राष्ट्रीय अध्यक्ष जेपी नड्डा से मुलाकात कर राज्य को प्रभावित करने वाले विभिन्न मुद्दों पर मार्गदर्शन मांगा। बैठक के बाद सैनी ने एक्स पर लिखा, श्आज दिल्ली में राष्ट्रीय अध्यक्ष जी से मुलाकात की तथा विभिन्न विषयों पर उनका मार्गदर्शन प्राप्त किया। बैठक का उद्देश्य हरियाणा को प्रभावित करने वाले महत्वपूर्ण विषयों पर चर्चा करना था। रविवार को, नई सरकार के शपथ ग्रहण के कुछ ही दिनों बाद, मुख्यमंत्री सैनी ने गृह और वित्त सहित प्रमुख विभागों को अपने पास बरकरार रखा, क्योंकि मंत्रिपरिषद को कैबिनेट विभाग आवंटित किए गए थे। सैनी ने गृह, वित्त, आबकारी और कराधान, योजना, नगर और ग्राम नियोजन, शहरी संपदा, सूचना, जनसंपर्क, भाषा और संस्कृति, न्याय प्रशासन, सामान्य प्रशासन, सभी के लिए आवास, आपराधिक जांच (सीआईडी), कार्मिक और प्रशिक्षण, और कानून और विधायी विभागों की देखरेख की। इस बीच, मंत्री अनिल विज को ऊर्जा, परिवहन और श्रम तथा मंत्री श्रुति चौधरी को महिला एवं बाल विकास के साथ–साथ सिंचाई एवं जल संसाधन विभाग सौंपा गया। हरियाणा में भाजपा के नेतृत्व वाली सरकार के तहत नायब सिंह सैनी ने गुरुवार को दूसरी बार मुख्यमंत्री पद की शपथ ली। हरियाणा के राज्यपाल बंडारू दत्तात्रेय ने पंचकूला के सेक्टर 5 स्थित दशहरा मैदान में आयोजित समारोह में सैनी और उनके मंत्रिपरिषद को पद की शपथ दिलाई। सैनी ने चंडीगढ़ स्थित हरियाणा सिविल सचिवालय में हरियाणा के मुख्यमंत्री के रूप में कार्यभार संभाला। हरियाणा प्रदेश

के 2.80 करोड़ परिवारजनों की अथक सेवा करने का संकल्प लेते हुए मैंने प्रदेश के मुख्य सेवक के रूप में कार्यभार ग्रहण किया है। मैं भावुक हूं और नतमस्तक हूं। सबका साथ, सबका विकास और सबका विश्वास का संकल्प सर्वोपरि है। हरियाणा को सर्वश्रेष्ठ, समृद्ध और आत्मनिर्भर प्रदेश बनाने में हम कोई कसर नहीं छोड़ेंगे। प्रधानमंत्री जी के नेतृत्व और मार्गदर्शन में हमारी पूर्ण बहुमत वाली सरकार सेवा, सुशासन, समानता, समृद्धि और गरीबों के कल्याण के लिए समर्पित होगी, हरियाणा के सीएम ने एक्स पर लिखा। विधानसभा चुनाव में 90 में से 48 सीटें जीतकर भाजपा हरियाणा में लगातार तीसरी बार सरकार बना रही है, जबकि कांग्रेस को 37 सीटें मिली हैं।

मुख्यमंत्री उमर अब्दुल्ला ने बडगाम विधानसभा सीट छोड़ी, गांदरबल सीट से विधायक बने रहेंगे

श्रीनगर, एजेंसी। जम्मू– कश्मीर के मुख्यमंत्री और नेशनल कॉन्फ्रेंस (एनसी) के नेता उमर अब्दुल्ला ने बडगाम विधानसभा सीट खाली कर दी है और गंदेरबल निर्वाचन क्षेत्र को बरकरार रखने का फैसला किया है, प्रोटेम स्पीकर मुबारक गुल ने सोमवार को सदन में घोषणा की। अब्दुल्ला ने हाल ही में हुए विधानसभा चुनावों में दोनों सीटें जीती थीं। जम्मू कश्मीर के मुख्यमंत्री उमर अब्दुल्ला ने बडगाम विधानसभा सीट छोड़ दी है और वह गांदरबल निर्वाचन क्षेत्र से विधायक बने रहेंगे। 'प्रोटेम स्पीकर'(अस्थायी विधानसभा अध्यक्ष) मुबारक गुल ने सोमवार को यह जानकारी दी। उमर अब्दुल्ला ने हाल में हुए विधानसभा चुनाव में दोनों सीट पर जीत हासिल की थी। गांदरबल सीट अब्दुल्ला परिवार का गढ़ मानी जाती है। 54 वर्षीय उमर अब्दुल्ला जम्मू–कश्मीर के मुख्यमंत्री के रूप में अपने पहले कार्यकाल के दौरान 2009 से 2014 तक गांदरबल से विधायक थे। इसके

साथ ही 95 सदस्यीय सदन में नेशनल कॉन्फ्रेंस के विधायकों की संख्या घटकर 41 रह गई है, हालांकि पार्टी को कांग्रेस के छह, पांच निर्दलीय और आम आदमी पार्टी तथा माकपा के एक–एक विधायक के समर्थन से अभी भी बहुमत प्राप्त है।

उमर अब्दुल्ला ने 2024 के चुनावों में गंदेरबल और बडगाम से जीत हासिल की

उमर अब्दुल्ला ने जम्मू और कश्मीर विधानसभा चुनाव 2024 में गंदेरबल निर्वाचन क्षेत्र से पीपुल्स डेमोक्रेटिक पार्टी (पीडीपी) के उम्मीदवार बशीर अहमद मीर को 10,000 से अधिक मतों से हराया। चुनाव आयोग के अनुसार, उन्होंने 32,727 वोट हासिल किए, जो उनके निकटतम प्रतिद्वंद्वी मीर के खिलाफ 10,574 के अंतर से जीते, जिन्हें 22,153 वोट मिले। अब्दुल्ला ने जम्मू और कश्मीर चुनावों में जिन दो निर्वाचन क्षेत्रों से चुनाव लड़ा था, उनमें से एक बडगाम में विधानसभा चुनाव में भी जीत दर्ज की थी। चुनाव आयोग के अपडेट के अनुसार, अब्दुल्ला ने अपने निकटतम प्रतिद्वंद्वी पीपुल्स डेमोक्रेटिक पार्टी (पीडीपी) के आगा सैयद मुंतजिर मेहदी को 18,485 मतों के अंतर से हराया।

शिवराज सिंह का मोदी सरकार में बढ़ा कद, अब मिली योजनाओं को लेकर बड़ी जिम्मेदारी

नई दिल्ली, एजेसी। प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी ने केन्द्रीय कृषि, किसान कल्याण तथा ग्रामीण विकास मंत्री शिवराज सिंह चौहान की अध्यक्षता में एक निगरानी समूह का गठन किया है, जो प्रधानमंत्री द्वारा घोषित योजनाओं तथा केन्द्रीय बजट, अधीनस्थ विधान तथा अन्य बुनियादी ढांचा परियोजनाओं के क्रियान्वयन की समीक्षा करेगा। नवगठित निगरानी समूह की पहली बैठक 18 अक्टूबर को प्रधानमंत्री कार्यालय (पीएमओ) में हुई थी,

जिसमें रेलवे बोर्ड के अध्यक्ष सहित भारत सरकार के सभी सचिव हाइब्रिड मोड में बैठक में शामिल हुए थे। मध्य प्रदेश के तीन बार मुख्यमंत्री रह चुके प्रधानमंत्री के नेतृत्व में निगरानी समूह हर महीने साउथ ब्लॉक स्थित पीएमओ में बैठक करेगा, ताकि सभी सरकारी योजनाओं की समीक्षा की जा सके और उन्हें अमलीजामा पहनाया जा सके। बैठक में शामिल अधिकारियों के अनुसार, प्रधानमंत्री

मोदी ने 2014 में उनके नेतृत्व में पहली एनडीए सरकार बनने के बाद से ही घोषित परियोजनाओं की प्रगति की निगरानी के लिए चौहान को शक्तियां सौंपी हैं। एचटी को यह भी पता चला है कि अतिरिक्त सचिवों और संयुक्त सचिवों के स्तर के वरिष्ठ अधिकारी जो प्रधानमंत्री द्वारा घोषित विभिन्न योजनाओं के लिए नोडल अधिकारी के रूप में काम कर रहे थे, उन्हें निगरानी समूह की बैठक में शामिल होने के लिए कहा गया है। जबकि सरकार निगरानी समूह के बारे में चुप्पी साधे हुए है।

जम्मू कश्मीर में नई सरकार बनते ही लोगों पर हमला चिंता का विषय – चिराग पासवान

पटना, एजेंसी। केंद्रीय मंत्री और लोक जनशक्ति (रामविलास) के प्रमुख चिराग पासवान ने जम्मू कश्मीर में आतंकियों के हमले में लोगों की जान जाने पर गहरी चिंता व्यक्त करते हुए कहा कि राज्य में नई सरकार के बनते ही इस तरह के हमले सवाल खड़े करते हैं। पटना में सोमवार को पत्रकारों के एक सवाल के जवाब में उन्होंने कहा कि जिस तरह से यह हमला हुआ, वह चिंता का विषय है। उन्होंने कहा कि केंद्र सरकार की भी नजर इसके ऊपर है। लेकिन जिस तरीके से नई सरकार के गठन के तुरंत बाद इस तरीके की घटनाएं शुरू हुई हैं, ये कहीं न कहीं सवाल खड़े करती हैं। उन्होंने कहा कि मुझे लगता है कि राज्य सरकार की भी यह जिम्मेदारी है कि इन बातों को गंभीरता से लेते हुए यह सुनिश्चित करें कि ऐसी घटना फिर नहीं हो। एक लंबे समय तक केंद्र के शासन में वहां पर विकास कार्य हो रहा था, इस तरीके की घटनाओं पर रोक लग गई थी। लेकिन्नि पुनः ऐसी घटनाएं घट रही हैं, तो यह चिंता की बात है और राज्य सरकार को इसे गंभीरता से लेना चाहिए। उल्लेखनीय है कि जम्मू–कश्मीर के गांदरबल जिले में हुए आतंकी हमले में सात लोगों की मौत हो गई। बताया जा रहा है कि यह हमला रविवार को गगनगीर इलाके में एक निजी कंपनी के मजदूरों के कैंप पर हुआ था। मारे गए लोगों में स्थानीय और बिहार के लोग शामिल है।

सीएम नायडू ने पुलिस विभाग के 763 करोड़ रुपये के बकाया बिलों का भुगतान करने का वादा किया

विजयवाड़ा एजेंसी। आंध्र प्रदेश के मुख्यमंत्री एन चंद्रबाबू नायडू ने कहा कि उनकी सरकार पुलिस विभाग के 763 करोड़ रुपये के बकाया बिलों का भुगतान करेगी और उन्होंने 6,100 कांस्टेबल की भर्ती करने का भी वादा किया। मुख्यमंत्री ने विजयवाड़ा के इंदिरा गांधी म्युनिसिपल स्टेडियम में पुलिस स्मृति दिवस के अवसर पर यह आश्वासन दिया। पुलिस स्मृति दिवस पर अपने भाषण के दौरान नायडू ने कहा, पिछली सरकार (वाईएसआरसीपी) ने पुलिस विभाग के 763 करोड़ रुपये से ज्यादा के बिलों का भुगतान नहीं किया है। पुलिस विभाग के साथ सहयोग करने के लिए चरणबद्ध तरीके से फैसले लिए जाएंगे और उन सभी बिलों का भुगतान किया जाएगा। पुलिस विभाग में निवेश को राज्य में निवेश करने के समान बताते हुए मुख्यमंत्री ने कहा कि उन्होंने हमेशा इसे महत्व

दिया है और इसमें सहयोग किया है। नायडू के अनुसार, राज्य सरकार ने सत्ता में आने के 125 दिनों के भीतर विभाग के 100 करोड़ रुपये के लंबित बिलों का भुगतान कर दिया है। पुलिस विभाग को नवीनतम तकनीक उपलब्ध कराने की आवश्यकता पर बल देते हुए नायडू ने कहा कि पुलिसकर्मी पुराने जमाने के तकनीकी उपकरणों से अपराधियों का मुकाबला नहीं कर सकते। नायडू ने कहा कि जब हम निगरानी और प्रौद्योगिकी के मामले में अपराधियों पर बढ़त हासिल कर लेंगे, तभी हम उन पर नियंत्रण कर सकेंगे। उन्होंने सुधार करने और उन्नत प्रौद्योगिकी लाने का वादा किया। उन्होंने वाईएस जगन मोहन रेड्डी के नेतृत्व वाली पिछली युवजन श्रमिक रायथू कांग्रेस पार्टी (वाईएस आरसीपी)सरकार पर पुलिस विभाग को राजनीतिक उत्पीड़न के उपकरण के रूप में इस्तेमाल करने का आरोप लगाया। रेड्डी की आलोचना करते हुए तेलुगु देशम पार्टी (तेदेपा) के प्रमुख ने कहा कि पूर्व मुख्यमंत्री पुलिस विभाग को 700 करोड़ रुपये जारी नहीं कर सकते है।

आवश्यक दवाओं की संशोधित कीमतों पर ममता ने पीएम मोदी को लिखी चिट्ठी

कोलकाता, एजेंसी। राष्ट्रीय औषधि मूल्य निर्धारण प्राधिकरण (एनपीपीए) ने हाल ही में आठ दवाओं के ग्यारह अनुसूचित यौगिकों की कीमतों में 50 प्रतिशत इजाफे की मंजूरी दी है।

इन आठ आवश्यक दवाओं की कीमतों में बढ़ोतरी को लेकर पश्चिम बंगाल की मुख्यमंत्री ममता बनर्जी ने प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी को चिट्ठी लिखी। उन्होंने पीएम मोदी से इस फैसले पर पुनर्विचार करने की अपील की। दो पन्नों के पत्र में ममता ने इस बात पर जोर दिया कि नागरिकों का कल्याण सर्वोपरि है। ममता बनर्जी ने कहा, मैं आपसे आग्रह करती हूं कि आम लोगों के स्वास्थ्य और कल्याण के लिए आठ आवश्यक दवाओं की कीमतों मं बढ़ोतरी के निर्णय पर पुनर्विचार करने के लिए संबंधित मंत्रालय को निर्देश जारी करें। हमारा उद्देश एक संतुलित दृष्टिकोण को संरक्षित करना होना चाहिए, जो नागरिकों के किफायती स्वास्थ्य देखभाल का सम्मान करता हो।

नागरिकों का कल्याण सर्वोपरि है। आपके तत्काल निर्देश का इंतजार है। स्वास्थ्य और परिवार कल्याण मंत्रालय के अनुसार, यह निर्णय 8 अक्तूबर को प्राधिकरण की बैठक के दौरान औषधि (मूल्य नियंत्रण) आदेश, 2013 के पैरा 19 के तहत दी गई

असाधारण शक्तियों का उपयोग करते हुए किया गया। इसका उद्देश्य सस्ती दवा उपलब्ध कराने के जनादेश से समझौता किए बिना इन दवाओं के निर्माण की वित्तीय व्यवहार्यता को बनाए रखना है।

संपादकीय

बड़ी समस्या के हल

शहरों के विस्तार के साथ ही शहरों में डिब्बाबंद खाने और बोतलबंद पेय का चलन तेजी से बढ़ा है। कई बार पैकिंग के डिब्बे ऐसे होते हैं कि हमें लगता है कि इन्हें धोकर रख लेते हैं, आगे कहीं खाना भर कर ले जाने या कोई और छोटा–मोटा सामान रखने के काम आएंगे। यों लालच में हम अपने घर में भी ढेर सारे प्लास्टिक के डिब्बे, बोतलें, छोटे–मोटे गत्ते के डिब्बे, कार्टन और कांच की बोतलें बढ़ाते जाते हैं। धीरे–धीरे रसोईघर की अलमारियों में ये डिब्बे बढ़ते जाते हैं और फिर थोड़े दिनों बाद रसोईघर एक छोटा संग्रहालय की तरह दिखने लगता है। कई बार कुछ लोग खाली भूखंडों में इन्हें फेंकते देखे जा सकते हैं। इन खाली डिब्बों में खाने की गंध से गाय, कुत्ते भोजन की तलाश में आ जाते हैं । इसी क्रम में कई बार गायों के पेट में प्लास्टिक चले जाने के कारण उन्हें गंभीर बीमारियों से ग्रसित होते देखा जा सकता है। कई बार उनकी मौत तक हो जाती है । अक्सर प्लास्टिक का उपयोग न करने के लिए जागरूकता अभियान भी चलाए जाते रहे हैं, लेकिन वे श्ऊंट के मुंह में जीराश जितने ही चल पाए हैं। कूड़े का उचित निपटान आज भी दुनिया के सामने एक बड़ी समस्या है, क्योंकि जितना उसका उत्पादन होता है, उतने उसके निपटान के प्रयास और साध ान आज भी उपलब्ध नहीं हैं । यह दुनिया की एक बड़ी समस्या बनती जा रही है। वर्ष 2020 में दुनियाभर में 2.20 अरब टन कचरा पैदा हुआ। विश्व बैंक का अनुमान है कि 2050 तक इसका उत्पादन 3.88 अरब टन हो जाएगा। बहुत से स्थानों और शहरों में बड़ी संख्या में कूड़े का एक स्थान से दूसरे स्थान पर स्थानांतरण करना निपटान का विकल्प देखा जाता रहा है जो स्थायी हल नहीं है। कचरे के संपर्क में आने से बैक्टीरिया जानवरों और मनुष्यों तक आ जाते हैं और बीमारी का कारण बनते हैं । इससे वायु प्रदूषण बढ़ता है, जो वन्यजीवों और हमारी अर्थव्यवस्था को खतरे में डालता । धरती की सुंदरता नष्ट होती है। कई देशों में इस समस्या का हल समुद्र में भी ढूंढ़ा गया। समुद्र कूड़ा डाल देना भी कम नुकसानदायक नहीं है। समुद्री कूड़ा नौवहन और जलीय जीवों के लिए घातक है । कुछ समय पहले आनलाइन खरीदारी के तहत मंगवाई गई एक पुस्तक जब पहुंची, तो पुस्तक पर ध्यान जाने से पहले इस पर ध्यान गया कि उसे एक डिब्बे में बंद करने के लिए क्या–क्या जतन किए गए थे। पुस्तक चौड़ी पारदर्शी टेप से पूरी तरह बंद की गई थी। उसके अंदर एक मोटा कागज था और उसके अंदर फिर प्लास्टिक की एक मोटी श्शीटश थी । पुस्तक को इतने मजबूत तरीके से डिब्बाबंद किया गया था कि उसे बिना चाकू से खोला जाना लगभग नामुमकिन था। सवाल है कि एक किताब को सुरक्षित अपनी जगह पहुंचाने के लिए क्या उसे इतने मजबूत तरीके से डिब्बाबंद करने की जरूरत होती है ? आनलाइन खरीदारी में कई ऐसे सामान होते हैं, जिन्हें इसी तरह भेजा जाता है। ऐसे डिब्बाबंद करने में ही कितनी सामग्री लगती होगी? क्या इससे कुछ कम में काम नहीं चल सकता है, जिससे वस्तु सुरक्षित अपनी जगह पहुंच जाए और ज्यादा कचरा भी न पैदा हो ? दरअसल, अब साफ–सफाई की व्यवस्था में अभिन्न हो गई अव्यवस्था की समस्या गांवों, शहरों, देशों से आगे बढ़कर विश्व की समस्या हो गई है और विश्व से देशों, शहरों और गांवों की भी समस्या बनती जा रही है। लगभग पच्चीस से तीस साल पुराने कूड़े से एक प्रकार का द्रव्य श्लीचेटश निकलना शुरू हो जाता है। यह जहरीला होता है । यह कूड़े के पहाड़ों के आसपास के भूजल और मिट्टी में मिलकर उसे जहरीला बना देता है। कूड़े के ढेरों से उठने वाली बदबू और आए दिन उन्हें जलाने से उठने वाला धुंआ, दोनों ही वहां रहने वालों के लिए कष्टदायक हैं। हमारे देश में कचरा निस्तारण की समस्या को लेकर लगातार दायर की जाने वाली याचिकाओं के बाद अब सूखा कचरा निष्पादन नियम 2016 लाया गया है । इन नियमों में सूखे और गीले कूड़े को अलग–अलग रखने के निर्देश दिए गए हैं। ऐसा न करने की स्थिति में दंड का प्रावधान भी रखा गया है। संविधान के अनुच्छेद 51 (ए) में दिए गए मौलिक कर्तव्यों में स्पष्ट कहा गया है कि श्जंगल, झील, नदी और वन्य–जीवन जैसे प्राकृतिक पर्यावरण की सुरक्षा और विकास करना हर नागरिक का कर्तव्य है ।श कचरा निष्पादन के संबंध में कुछ अन्य नियम ऐसे हैं जो कचरे का जैविक निष्पादन कर उसे संतुलित रखने पर बल देते हैं। इससे संबंधित बहुत– चुनौतियां अभी भी सामने खड़ी हैं, जिनसे निपटने के लिए कानूनों के व्यावहारिक स्तर पर अमल किए जाने की नितांत आवश्यकता है। कई स्थानों पर लगाए गए कचरे से ऊर्जा बनाने वाले संयंत्र भी कारगर सिद्ध नहीं हो पा रहे हैं। इन संयंत्रों से आर्थिक नुकसान भी हो रहा है। इनमें आने वाला गीला कूड़ा व्यर्थ जाता है। केवल सूखा कूड़ा ही ऊर्जा उत्पादन के काम आता है। दूसरे, इन संयंत्रों से अपेक्षित ऊर्जा भी नहीं मिल रही है। कचरा रूपांतरण संयंत्रों से वायु प्रदूषण बहुत अधिक होता है । इस बड़ी समस्या के हल बड़े और छोटे स्तरों पर करने की जरूरत है या यों कहें कि इस ओर कोशिशें तेज करने की महती आवश्यकता है।

21वीं सदी में सीखने को फिर से परिभाषित करना

आदित्य

तकनीकी हस्तक्षेप के माध्यम से वर्तमान समय और भविष्य समय एक दूसरे में विलीन होने को तैयार हैं विजय गर्ग शिक्षण पद्धतियां और कार्यस्थल की मांगें तेजी से विकसित हो रही हैं, जिससे शैक्षणिक संस्थान बदलते समय के साथ तालमेल बिठाने वाले नए प्रतिमानों को अपनाने के लिए प्रेरित हो रहे हैं। अब यह तेजी से पहचाना जा रहा है कि कृत्रिम बुद्धिमत्ता और प्रौद्योगिकी का उपयोग सीखने की प्रकृति को बदल देगा, जैसा कि पिछले 100 वर्षों में कुछ चीजों में हुआ है। यदि कोई छह या सात दशक पहले वापस जाए तो परिवर्तन की मूल प्रकृति और उसकी गति कोई नई बात नहीं है। डिजिटलीकरण प्रक्रिया ने अंकों को सीखने की प्रकृति को बदल दिया है। कैलकुलेटर के उपयोग ने गुणन सारणी को याद करना काफी हद तक अप्रासंगिक बना दिया है। एक बड़ा बदलाव आया जिसने हर गुजरते दशक के साथ इसकी पहुंच और गहराई को बढ़ाया है। कैलकुलेटर से लेकर कम्प्यूटरीकरण और कम्प्यूटरीकरण दक्षताओं के लगातार ऊपर की ओर बढ़ने से न केवल तालिकाएँ और एल्गोरिदम केवल मामूली रूप से प्रासंगिक हो गए, बल्कि लॉग तालिकाएँ भी इतिहास का विषय बन गईं। कक्षा और परीक्षा हॉल में एक यांत्रिक उपकरण की अनुमति देने में कुछ प्रारंभिक अनिच्छा के बाद, सीखने की प्रकृति को नई वास्तविकताओं के साथ समायोजित किया गया। मशीन से जुड़ी वास्तविकता नया प्रतिमान बन गई। सीखने की प्रकृ ति धीरे–धीरे लेकिन निश्चित रूप से किसी की स्मृति के माध्यम से काम करने से लेकर मशीनों और उनके एल्गोरिदम के अभ्यस्त होने तक बदल गई। मानसिक सहयोग पर वापस लौटने से मशीन–आध ारित समाधानों की ओर रुझान बदल गया। प्रौद्योगिकी में बदलाव के लिए भी सीखने की जरूरत है लेकिन एक अलग क्रम की। रोजगार बाजार में बने रहने के लिए विशेषज्ञता के दोहरेपन की मांग अधिक थी। वास्तव में, मशीनें बोलने के तरीके में एक–दूसरे के साथ प्रतिस्पर्धा करने लगीं और इसका एक उत्कृष्ट उदाहरण रूस में जेट विमान (इलुशिन) के निर्माण में उपयोग की जाने वाली विभिन्न प्रौद्योगिकी मोड और बोइंग विमान में उपयोग की जाने वाली तकनीक होगी। नई वास्तविकताओं की आवश्यकता है जिसे श्नया सीखनाश कहा जा सकता है, उसके प्रति नया दृ ष्टिकोण। अंकगणित, गणित और बहुत कुछ पढ़ाने की प्रकृति में बदलाव आया और कक्षा में कई क्रांतियों से भी बड़ी क्रांति आ गई। इस क्रांति की प्रकृति महत्वपूर्ण थी क्योंकि यह एक सतत क्रांति थी और आज, यह सीखने वाले को कृ त्रिम बुद्धिमत्ता के विभिन्न रूपों के माध्यम से भी सामना करती है। यांत्रिक खोज की धारणाओं ने न केवल जानकारी की खोज में क्रांति ला दी है, बल्कि फैंसी ड्राइंग रूम में विश्वकोश को सजावट का सामान भी बना दिया है। वे अब, शायद, इस बात का प्रदर्शन बन गए हैं कि बहुत समय पहले सीखना कैसा हुआ करता था। इन सबका न केवल कक्षा पर बल्कि कार्यस्थल पर भी प्रभाव पड़ता है। इसकी सटीक अभिव्यक्ति स्पष्ट नहीं है, लेकिन हंगामा जारी है। जबकि पहले शिक्षण संस्थाएं इस बात पर बराबर ध्यान देती थीं कि कैसे पढ़ाया जाए। अब फोकस इस बात पर भी बराबर है कि क्या पढ़ाना है और कैसे पढ़ाना है। कक्षा और कार्यस्थल दोनों में दबाव समान रूप से तीव्र है, जो एक आदर्श बदलाव की मांग करता है। शिक्षण संगठनों के लिए वास्तविक चुनौती प्रतिमान परिवर्तन को मूर्त रूप देने में है। स्वयं को यह याद दिलाना उपयोगी होगा कि शिक्षण संगठन कोई नई बात नहीं है। एक प्रस्ताव के रूप में, स्वयं को पुनः अविष्कृत करते रहने की आवश्यकता आम हो गई है। बहुत पहले नहीं, दिमाग को खुला रखने पर ध्यान केंद्रित किया जाता था। उनमें से अधिकांश अब लगभग एक नए प्रतिमान में बदल गया है। दिमाग को बढ़ते रहना। कौशल और दक्षताओं को बढ़ाना एक शिक्षण संगठन का एक परिभाषित गुण बना हुआ है।

यह बस है स्वयं को केवल दिमाग को खुला रखने तक ही सीमित रखना संभव नहीं है। आज, सीखने के लिए प्रौद्योगिकी के नए और उभरते पैटर्न की सराहना करने की क्षमता की आवश्यकता होती है। बहुत पहले नहीं, मशीन के उपयोग के लिए साक्षरता महत्वपूर्ण थी क्योंकि किसी को वर्णमाला का अध्ययन करना पड़ता था। अब स्थिति उस संदर्भ में पहुंच गई है जहां भले ही किसी के पास वर्णमाला को पंच करने की क्षमता न हो, वह मशीन में बोल सकता है और मशीन उसका अनुपालन करेगी। फिलहाल, यह प्रक्रिया प्रारंभिक चरण में है, लेकिन जिन समस्याओं से निपटना है, वे दिन–ब–दिन बढ़ती जा रही हैं। सीखने के दायरे में बदलाव महत्वपूर्ण है क्योंकि अगर कोई लिखने में सक्षम हुए बिना भी समस्याओं को हल कर सकता है, तो वास्तव में सीखने के पूरे प्रतिमान में एक क्रांति आ जाएगी। इसलिए, एक शिक्षण संगठन का प्रस्ताव कई मूलभूत सुधारों से गुजर रहा है। 20वीं सदी में एक समय था जब प्रौद्योगिकी ने दूरी की प्रकृति को बदल दिया था, और अब प्रौद्योगिकी के प्रति एक उभरता हुआ दृष्टिकोण प्रतीत होता है जो समय की प्रकृति को ही बदल सकता है। वर्तमान समय और भविष्य का समय तकनीकी हस्तक्षेप के माध्यम से एक–दूसरे में विलीन होने के लिए तैयार हैं, जिससे व्यक्ति को टाइम मशीन से गुजरने की अनुमति मिलती है, भले ही अस्थायी रूप से ही सही। ये मौलिक अभिधारणाएं हैं और हम वर्तमान में जो करने में सक्षम हैं, उससे कहीं अधिक गहराई से पुनर्विचार करने की आवश्यकता है।

जलवायु संकट और दूर होते लक्ष्य

विनोद

जलवायु संकट दिनोंदिन गहरा रहा है। हर वर्ष गर्मी कुछ बढ़ी हुई दर्ज होने लगी है। वैश्विक ताप और इससे जुड़े हर आंकड़े लगातार बढ़ते संकट की ओर इशारा कर रहे हैं। जलवायु संकट से निपटने के लिए निर्धारित किए गए लक्ष्यों और उन्हें हासिल करने के लिए किए रहे प्रयासों के बीच बहुत बड़ा अंतर है, जो अब और बढ़ रहा है। वायुमंडल में पृथ्वी के तापमान को बढ़ाने वाली गैसों की मात्रा चरम पर है। ब्लूमबर्ग के आनलाइन आंकड़ों के मुताबिक अभी वायुमंडल में कार्बन डाइआक्साइड का ग्राफ 421.44 पीपीएम तक जा पहुंचा है, जो पृथ्वी के संतुलित तापमान के लिए जरूरी (350 पीपीएम) पैमाने से 71.44 ज्यादा है। लगभग 23 श्मार्केटर रिसर्चश, बर्लिन के ताजा आंकड़ों के अनुसार, हमारी वर्तमान तैयारियां पेरिस जलवायु समझौते के लक्ष्यों से बहुत पीछे हैं। यही स्थिति रही, तो पृथ्वी का औसत तापमान अगले चार साल और नौ महीने में 1.5 डिग्री सेल्सियस बढ़ जाएगा। वहीं 2.0 डिग्री सेल्सियस की वृद्धि को पार करने में साल का समय शेष है। यह ध्यान देने योग्य है कि ये दोनों लक्ष्य वैश्विक स्तर पर इस सदी के अंत तक के लिए, लंबे विचार–विमर्श और खींचतान के बाद, 2015 में पेरिस जलवायु परिवर्तन समझौते में निर्धारित किए गए थे। इसे अब तक का सबसे आशावादी समझौता माना गया था। इसके बावजूद वैश्विक तापमान में वृद्धि लगातार होती जा रही है। श्यूनाइटेड इन साइंसश की रपट तो और भी भयावह तस्वीर प्रस्तुत करती है। इसमें कहा गया है कि वर्तमान नीतियों के तहत, इस सदी के अंत तक वैश्विक तापमान के तीन डिग्री सेल्सियस तक बढ़ने की संभावना है। यह जलवायु संकट से बचाव के लिए गंभीर चेतावनी है। हालांकि ऐसा नहीं है कि पेरिस समझौते से पहले के एक दशक में कोई प्रभावी काम नहीं हुआ। जब यह समझौता 2015 में लागू हुआ, उस समय अनुमान था कि 2030 तक ग्रीनहाउस गैसों की मात्रा सोलह फीसद बढ़ेगी, लेकिन इस दौरान किए गए वैश्विक प्रयासों का ही परिणाम है कि 2030 तक यह अनुमानित वृद्धि घट कर तीन फीसद तक आ गई है। फिर भी यह प्रयास अभी भी पर्याप्त नहीं है। पेरिस जलवायु समझौते के अनुसार, पृथ्वी के बढ़ते तापमान को 1.5 डिग्री सेल्सियस से नीचे सीमित करने के लिए 2030 तक ग्रीनहाउस गैसों के उत्सर्जन में क्रमशः 28 और 42 फीसद की कमी होनी चाहिए थी। मगर हम अब भी उत्सर्जन कम करने के बजाय उसमें कम से कम तीन फीसद की वृद्धि की राह पर हैं। अगर जलवायु परिवर्तन के कारणों और इसके प्रभावों पर नजर डालें, तो हर स्तर पर न केवल एक असमान व्यवस्था जिम्मेदार दिखती है, बल्कि इसका प्रभाव भी वैश्विक स्तर पर अलग–अलग दिखाई देता है। सामान्यतया यह कहा जा सकता है कि जलवायु परिवर्तन का सबसे अधिक प्रभाव उन लोगों या क्षेत्रों पर पड़ता है, जिनका इसमें योगदान बहुत कम या नगण्य होता है। यह समझ जलवायु विमर्श की शुरुआत से ही बननी शुरू हो गई थी, जब तत्कालीन प्रधानमंत्री इंदिरा गांधी ने 1972 में आयोजित स्टॉकहोम सम्मेलन में पर्यावरणीय क्षरण को गरीबी के नजरिए से देखने की वकालत की थी। मौजूदा जलवायु संकट और पर्यावरण क्षरण का स्वरूप व्यापक और वैश्विक है, लेकिन उससे निपटने की आर्थिक क्षमता प्रत्येक देश में असमान विकास की वजह से अलग–अलग है। इस असमानता के कारण, पिछले पांच दशकों में कई समझौते किए गए और अनेक बैठकें आयोजित की गई, लेकिन ओजोन परत के छिद्र को छोड़ कर किसी भी क्षेत्र में प्रभावी कदम नहीं उठाए जा सके। इसके साथ–साथ, बढ़ते जलवायु संकट में पश्चिमी या विकसित देशों का योगदान अधि ाक रहा है, इसलिए उनकी जिम्मेदारी भी उसी अनुपात में होनी चाहिए, लेकिन मौजूदा वैश्विक संदर्भ में ऐसा नहीं दिखता। वैश्विक परिदृ श्य में पारदर्शिता बढ़ने के बावजूद, सभी देशों के बीच श्क्षमता के अनुसार साझा, लेकिन विभेदित जिम्मेदारियोंश के सिद्धांत पर केवल सैद्धांतिक सहमति बनी है।

इस सिद्धांत को व्यावहारिक रूप में लागू करने में विकसित देश किसी भी प्रकार की संजीदगी नहीं दिखा रहे हैं। वहीं, विकासशील देशों, जैसे भारत और ब्राजील, की प्राथमिकताएं अपनी विशाल जनसंख्या को बुनियादी संसाधन मुहैया कराने पर केंद्रित हैं। दूसरी ओर, गरीब देश, विशेषकर समुद्री किनारों पर बसे या द्वीपीय देश, मौजूदा वैश्विक आर्थिक तंत्र के शिकार बन रहे और जलवायु संकट का सबसे अधिक दंश झेल रहे हैं। मौजूदा जलवायु संकट पर सबसे अधिक प्रभाव आर्थिक नीतियों का है, विशेषकर तब जब पेरिस जलवायु समझौते के तहत उत्सर्जन को कम करने के लिए 2030 और 2050 के स्पष्ट लक्ष्य निर्धारित किए गए हैं। किसी भी आर्थिक गतिविधि पर लागू कर की दर या उसमें दी गई छूट इस बात का संकेत देती है कि जलवायु संकट से निपटने के हमारे प्रयास कितने प्रभावी हैं। इसका कारण यह है कि हर आर्थिक गतिविधि प्रत्यक्ष या परोक्ष रूप से वैश्विक तापमान वृद्धि के लिए जिम्मेदार उत्सर्जन से जुड़ी से होती । मसलन, आज भी जीवाश्म ईंधन ऊर्जा का सबसे सस्ता और सुलभ स्रोत है और इसके उत्पादन और उपयोग पर अभी भी सरकारी मदद दी जा रही है, जो स्पष्ट रूप से जलवायु संकट को बढ़ावा देने वाली नीति है। विकासशील देश इसी व्यवस्था पर निर्भर हैं, क्योंकि उनके पास हरित ऊर्जा विकसित करने के लिए न तो पर्याप्त संसाधन हैं और न ही विकसित देशों से तकनीकी सहायता और आर्थिक साधन मिल रहे हैं।

अस्वास्थ्यकर खाद्य पदार्थ तबाही मचा रहे

ललित

भोजन इस ग्रह पर प्रत्येक व्यक्ति की मूलभूत आवश्यकता है। हमें अपने भोजन से ऊर्जा और आवश्यक सूक्ष्म और स्थूल पोषक तत्व मिलते हैं। लेकिन आजकल यह बुनियादी आवश्यकता इसकी सामग्री में विभिन्न प्रकार की मिलावट से ग्रस्त है। हम अपनी खाद्य शृंखला में अपनी अज्ञानता या अपनी मजबूरी के कारण बहुत सारे कीटनाशकों, कीटनाशकों और अन्य प्रकार के खरपतवारनाशी रसायनों का लगातार उपयोग कर रहे हैं। क्योंकि आजकल विभिन्न प्रकार के कीटों से छुटकारा पाने के लिए हमारी वनस्पतियों और अन्य खाद्य पदार्थों में इस प्रकार के रसायनों का उपयोग करना बहुत अनिवार्य हो गया है। इसमें कोई संदेह नहीं कि ऐसे कीटनाशक हमारी वनस्पति के लिए, उनकी अधिकतम उपज और सुरक्षा के लिए बहुत महत्वपूर्ण हैं। लेकिन एक कहावत है कि अति हर चीज की बुरी होती है। ऐसे रसायनों का उपयोग करने की हमारी अति निर्भरता की आदत हमारे लिए विनाश पैदा कर रही है। क्योंकि हम जानते हैं कि अंततः ये हानिकारक रसायन प्रत्यक्ष या अप्रत्यक्ष रूप से हमारी खाद्य शृंखला में प्रवेश कर जाते हैं। आजकल हम विभिन्न प्रकार के हानिकारक खरपतवारों और अवांछित घास के उन्मूलन के लिए अक्सर कीटनाशकों का उपयोग कर रहे हैं। यहां तक घ्कि मक्का और गेहूं जैसी हमारी मुख्य फसलों में भी हम उचित उपज प्राप्त करने के लिए हर साल लगातार ऐसे कीटनाशकों का उपयोग कर रहे हैं। यहां तक घ्कि हमारी सब्जियों और फलों में भी बहुत सारे रसायन और संरक्षक होते हैं। हमारे बाजार पूरे वर्ष हर प्रकार के फलों और सब्जियों से भरे रहते हैं। यहां तक घ्कि हम पूरे वर्ष अपने बाजारों से बेमौसमी फल और सब्जियां भी प्राप्त करते हैं। हालॉकि हम आम तौर पर इन खाद्य पदार्थों को उनके उपभोग से पहले धोते हैं। लेकिन इन रसायनों का कुछ प्रतिशत आम तौर पर इन खाद्य पदार्थों में निहित होता है। अंततः ऐसे सभी हानिकारक रसायन धीरे–धीरे हमारी खाद्य शृंखला में प्रवेश कर जाते हैं। परिणामस्वरूप हमने पाया है कि अधिकतर लोग बहुत सी एलर्जी प्रतिक्रियाओं और अन्य स्वास्थ्य बीमारियों से पीड़ित हैं। इसके विपरीत हम इन प्रतिक्रियाओं और अन्य स्वास्थ्य समस्याओं से छुटकारा पाने के लिए विभिन्न प्रकार के एंटीबायोटिक दवाओं का उपयोग करते हैं। और वो एलोपैथिक दवाइयां हमारे लिए और भी मुसीबत खड़ी कर रही हैं। हम इस कहर से कैसे छुटकारा पाएं, ये हम सभी के लिए ज्वलंत मुद्दा है। हमारा मानना है कि इस खतरे का सबसे प्रशंसनीय समाधान जैविक उत्पादों और खाद्य पदार्थों का उपयोग है। जैविक खेती के प्रयोग से हम इन रसायनों के दुष्प्रभाव से छुटकारा पा सकते हैं। हालॉकि, जैविक खेती में हमें वांछित और पर्याप्त मात्रा में फसल की पैदावार नहीं मिल पाती है। लेकिन, यह हमें कई स्वास्थ्य लाभ दे सकता है। हमारे लिए केवल दो ही विकल्प उपलब्ध हैं, यदि हम ऐसे रसायनों का उपयोग करते हैं तो हमें अधिक उत्पादन मिलेगा और यदि हम जैविक खेती का उपयोग करते हैं तो हमें कम उत्पादन मिलेगा लेकिन शुद्ध और स्वच्छ। विकल्प हमारा है, लेकिन हम अपने स्वास्थ्य के साथ समझौता नहीं कर सकते। अस्वास्थ्यकर और मिलावटी खाद्य पदार्थों की चाहत में। ये हानिकारक रसायन धीरे–धीरे भूजल और हमारी मिट्टी में प्रवेश करते हैं और इन प्राकृतिक संसाधनों की मूल बनावट और गुणवत्ता को प्रभावित करते हैं। हालॉकि ये हानिकारक रसायन न केवल इस धरती पर मनुष्यों के जीवन को प्रभावित कर रहे हैं, बल्कि अन्य निम्न प्राणियों पर भी विभिन्न प्रकार के प्रतिकूल प्रभाव डाल रहे हैं। इन रसायनों से अनेक लाभकारी सूक्ष्मजीव प्रभावित होते हैं। ऐसे हानिकारक उत्पादों के अत्यधिक उपयोग से विभिन्न अन्य निचले प्राणियों के आवास सहित हमारा पूरा पारिस्थितिकी तंत्र प्रभावित होता है। हमारी खाद्य शृंखला के इस डिजाइन को बदलने की तत्काल आवश्यकता है। अन्यथा आने वाले दिनों में इन रसायनों के कारण हमें और अधिक परेशानी होगी। कुल मिलाकर हम कह सकते हैं कि हमारे खाद्य उत्पादों में ऐसे रसायनों के अत्यधिक उपयोग के कारण होमोसेपियंस का जीवन ध ीरे–धीरे केमिकोसैपियंस में परिवर्तित हो रहा है। इस दिशा में जन जागरूकता की नितांत आवश्यकता है। हमारा कृषिविशेषज्ञ इस समस्या की गंभीरता को बेहतर ढंग से समझ सकते हैं, वे हमारे किसानों को इस दिशा में अधिक सहज तरीके से मदद कर सकते हैं।

जी हां, लोकल ही है ग्लोबल, इसके मूल में ही भविष्य

संदीप

कोविड युग और ओटीटी प्लेटफार्मों के उदय ने दर्शकों की पसंद को काफी हद तक बदल दिया है। इससे बॉक्स ऑफिस की बिक्री में गिरावट आई है। पहले की कहानियां और कथानक, जिन्हें कभी सफलता की गारंटी माना जाता था, अब उतने दर्शक नहीं खींच पा रहे हैं। यहां तक कि तथाकथित श्स्टार्सश के सिनेमा भी अब कड़ी परीक्षा के दायरे में आ गए हैं। अब न तो प्रसिद्धि और न ही स्टारडम, सिनेमाघरों में दर्शकों को खींचने में सक्षम हो रहे हैं। आखिर, इसकी वजह क्या है? सिनेमा को अक्सर समाज का प्रतिबिंब कहा जाता है। फिल्म निर्माता समय–समय पर ऐसी कहानियां गढ़ने की कोशिश करते हैं, जो समाज के सूक्ष्म और व्यापक पहलुओं को दर्शाती हों। जिस तरह का सिनेमा काम करता है, वह अक्सर बड़े सामाजिक दृष्टिकोण से जुड़ता है। जैसे 1970 के दशक का श्एंग्री यंग मैनश युग, जिसमें बड़े पर्दे का नायक समाजिक बुराइयों से लड़ता था। यह उस समय की समाज की आकांक्षाओं को दर्शाता था, जो अत्यधिक गरीबी और राष्ट्रीय आपातकाल जैसी घटनाओं से प्रभावित थी। बाद के दशकों में भी इसी तरह के सिनेमा को दर्शकों से सकारात्मक प्रतिक्रिया मिली। लेकिन वर्तमान में सफल सिनेमा के रुझान क्या हैं? कोविड के बाद सफल सिनेमा का पैटर्न कैसे बदला है? हम, एक समाज के रूप में, अभी भी कोविड के बाद अपनी जिंदगी को सामान्य बनाने की कोशिश कर रहे हैं। हमारी सिनेमा पसंद भी बदल रही है। कोविड के बाद के युग में भारतीय सिनेमा उद्योग का परिदृ श्य, जो विभिन्न भाषाओं और राज्यों में फैला हुआ है, एक बदलाव के दौर से गुजर रहा है। 'स्टीरियोटाइप्ड कहानियों पर बना सिनेमा बॉक्स ऑफिस पर विफल हो रहा हैं। यह एक गंभीर चर्चा का विषय है। यह चर्चा हमसे दो प्रमुख सवालों के जवाब मांगती है। पहला, भारतीय सिनेमा में सफलता का नया रुझान क्या है? और दूसरा, सिनेमा प्रेमियों की पसंद में यह बदलाव क्या कर रहा है, जिससे बॉक्स ऑफिस पर खराब परिणाम आ रहे हैं? पहला सवाल बहुत पेचीदा है और इसमें कोविड के बाद की सफलता के रुझानों का विश्लेषण करना शामिल है। कोविड के बाद के परिवर्तन ने सिनेमा निर्माताओं को फिर से सोचने और सिनेमा कैसे बनाया जाए, इसकी रणनीति को फिर से संरेखित करने के लिए मजबूर कर दिया है। नई रणनीति का एक मुख्य हिस्सा है जड़ों से जुड़ी कहानियां। सिनेमा जो प्राचीन भारत या छोटे शहरों की कहानियों, टियर 2 प्लॉट्स, ग्रामीण परिदृश्यों, लोककथाओं आदि को बताता है। हाल के वर्षों की सफलताएं इस बात की पुष्टि करती हैं कि इस फॉर्मूले ने सिनेमा निर्माताओं को बड़े पैमाने पर सफलता प्रदान की है। आइए इस प्रवृत्ति को और विस्तार से समझते हैं। पिछले तीन वर्षों में, यदि ईमानदारी से विश्लेषण किया जाए, तो हमें एहसास होता है कि अधिकांश सफल सिनेमा जिनमें प्रसिद्ध अभिनेता नहीं हैं, उनमें कुछ चीजें सामान्य होती हैं, जैसे दिलचस्प कंटेंट्ध अवधारणा पर आधारित फिल्म निर्माण, कंटेंट जो या तो बहुत स्थानीय, बहुत ग्रामीण या बहुत मध्यमवर्गीय होती है। इन सिनेमा का उद्देश्य बड़े पर्दे पर आम लोगों की भावनाओं को प्रस्तुत करना है। आकर्षक ग्रामीण व सामान्य अनछुए परिदृश्य कहानी कहने में योगदान देता है। यह एक खुला रहस्य रहा है कि भारतीय सिनेमा, विशेष रूप से हिंदी सिनेमा, दशकों से वास्तविक लोगों की आकांक्षाओं को पकड़ने में विफल रहा है। बल्कि, इसने अक्सर गलत चित्रण किया और देश की गलत तस्वीर को चित्रांकन किया। यह सब कोविड के बाद के सिनेमाई युग में धराशायी हो गया। अब बेतरतीब ढंग से रची गई कहानियां काम नहीं कर रही हैं। लोग ऐसी कंटेंट को पसंद कर रहे हैं जो सांस्कृतिक और दृश्यात्मकता दोनों रूप से अधिक जड़ों से जुड़ी हो। इस प्रवृत्ति को आरआरआर, पोन्नियिन सेल्वन, ब्रह्मास्त्र पार्ट वन– शिवा, कांतारा, कश्मीर फाइल्स, पुष्पा, 12वीं फेल, द केरल स्टोरी और श्अखंडाश जैसी

सिनेमाओं की सफलता में देखा जा सकता है। लेकिन क्या यह कहना सही होगा कि जड़ों से जुड़ी कहानियां सफलता का नया मंत्र हैं? अगर हम 2024 की कुछ सफल एवं समाज पर सकारात्मक छाप छोड़ने वाली सिनेमाओं का विश्लेषण करें, तो हमें कल्कि 2898–एडी, स्त्री–2, हनुमान, आर्टिकल 370, मुंज्या और लापता लेडीज जैसी फिल्में मिलती हैं। ये फिल्में या तो एक आम आदमी की कहानी कहती हैं, या छोटे शहरों की लोककथाओं पर आधारित हैं, या फिर हमारे समृद्ध इतिहास से प्रेरणा लेती हैं। लेकिन क्या हम इसमें कोई प्रवृत्ति देख सकते हैं?

आइए और गहराई से जाकर इन कहानियों को समझें। साल की सबसे ज्यादा कमाई करने वाली फिल्म कल्कि 2898–एडी महाभारत और विष्णु के अवतार कल्कि पर आधारित है। सिनेमाघरों में इस सिनेमा को बहुत अच्छी प्रतिक्रिया मिली, खासकर महाभारत की घटनाओं को चित्रित करने वाले दृश्यों को सबसे ज्यादा सराहा गया। हमारी सांस्कृ तिक विरासत को भविष्य के गहनता से जोड़ने ने न सिर्फ भारत में बल्कि वैश्विक स्तर पर भी दर्शकों से जुड़ने में सफलता पाई।

पीयू के छात्र अभिषेक दुबे राज्य स्तरीय शोधपत्र लेखन प्रतियोगिता में चयनित

ब्यूरो प्रमुख
विश्व प्रकाश श्रीवास्तव

जौनपुर। वीर बहादुर सिंह पूर्वांचल विश्वविद्यालय के इलेक्ट्रॉनिक और संचार अभियांत्रिकी विभाग के छात्र अभिषेक दुबे ने भारतीय शिक्षा मंडल, गोरक्ष प्रांत द्वारा आयोजित विजन फॉर विकसित भारत राज्य स्तरीय शोध पत्र लेखन प्रतियोगिता में उत्कृष्ट सफलता प्राप्त की है। यह प्रतियोगिता 13 अक्टूबर 2024 को मदन मोहन मालवीय प्रद्योगिकी विश्वविद्यालय, गोरखपुर में आयोजित की गई, जिसमें पूरे देश से 168,000 प्रतिभागियों ने भाग लिया। इनमें से 1,200 प्रतिभागियों का चयन किया गया, जिनमें अभिषेक दुबे का नाम भी शामिल है। आगामी कार्यक्रम, जो राष्ट्रीय स्तर पर आयोजित शोधार्थी सम्मेलन के रूप में होगा, की तिथि 15, 16 और 17 नवंबर को एसजीटी यूनिवर्सिटी, गुरुग्राम, हरियाणा में होगा।इस तीन दिवसीय सम्मेलन में विभिन्न क्षेत्रों के विशेषज्ञ और शोधार्थी अपने शोध पत्र प्रस्तुत करेंगे और चर्चा करेंगे। अभिषेक ने अपनी सफलता का श्रेय विश्वविद्यालय के कुलपति प्रोफेसर वंदना सिंह, विभाग के अध्यक्ष प्रोफेसर रवि प्रकाश, डॉ. विक्रांत बटेजा, डॉ. प्रवीण सिंह, डॉ. मोहम्मद अनीश, प्रो. संतोष कुमार, प्रो. प्रदीप कुमार को दिया। सभी का मानना है कि अभिषेक दुबे की इस उपलब्धि ने विश्वविद्यालय का मान और प्रतिष्ठा बढ़ाई है।

दीपोत्सव व दीपावली पर्व पर अग्नि शमन कर्मी रहे सतर्क – एमपी सिंह

अयोध्या। दीपोत्सव व दीपावली को सकुशल सम्पन्न कराने के लिये अग्निशमन विभाग भी कोई कोर कसर नही छोड रहा है।मंगलवार को मुख्य अग्निशमन एमपी सिंह ने अग्निशमन अधिकारियो के साथ अपने कार्यालय पर बैठक कर आवश्यक निर्देश दिये।बैठक मे उन्होने कहा कि दीपोत्सव पर्व पर पूरे विश्व की निगाहे टिकी रहती है। काफी संख्या मे वीवीआईपी, दर्शको की भीड रहती है। इसलिये हम सभी को छोटी सी छोटी घटनाओ पर ध्यान देना होगा।अग्निशमन कर्मियो को सतर्क रहना होगा। उन्होने कहा कि अग्निशमन विभाग एक ऐसा विभाग है जिसपर भीड नियंत्रण से लेकर,आग से बचाव के प्रति लोगो व दीपोत्सव मे काम कर रहे विभिन्न एजेंसियो, ठेकेदारो,होटल व अन्य प्रतिष्ठानो के स्वामियो के प्रति जागरुक करना है।उन्होने वहां पर मौजूद सभी अग्निशमन अधिकारियो से कहा कि आप सभी लोग अपने अपने क्षेत्रो मे स्थित होटल, लाज, गेस्ट हाउस, रेस्टोरेंट सहित अन्य प्रतिष्ठानो का निरीक्षण करे।निरीक्षण के दौरान कोई भी कमी मिले तो संबंधित स्वामियो व मैनेजर को इस कमी को दूर का निर्देश दे।दीपावली पर भी विशेष सतर्कता बरते।बैठक मे प्रभारी अग्निशमन अधिकारी पुलिस लाइन प्रदीप कुमार पाण्डेय,एफएसएसओ गिरीश कुमार दूबे, एफएफएसओ सुधीर यादव मौजूद रहे।

विभिन्न मांगो को लेकर शिक्षक संघ ने पाचवें दिन धरना प्रदर्शन कर किया बुद्दि सिद्दि यज्ञ

अयोध्या। डॉ राम मनोहर लोहिया आवासीय परिसर अपनी मांगो को लेकर शिक्षक संघ द्वारा चलाए जा रहे आंदोलन के तहत मंगलवार को पांचवे दिन भी धरना प्रदर्शन जारी रहा।जिसका समर्थन सपा पूर्व मंत्री तेज नारायण पाण्डेय उर्फ पाण्डेय ने भी दिया। धरने में शामिल शिक्षकों ने बताया कि सोमवार को राज भवन द्वारा इस प्रकरण को गंभीरता से संज्ञान में लेते हुए विशेष प्रतिनिधि एवं अपर मुख्यसचिव, सुधीर यस बोबडे जी को पूरे प्रकरण की जानकारी लेने हेतु विश्वविद्यालय भेजा गया था।सुधीर यस बोबडे जी ने विश्वविद्यालय के अधिकारियों शिक्षकों एवं कर्मचारी एवं आंदोलनरत शिक्षकों से अलग–अलग वार्ता की।संघ ने अपर मुख्यसचिव को सभी तथ्यों से अवगत कराया तो उन्होने कहा कि विश्वविद्यालय के अधिकारियों ने उन्हे सही सूचनाओं से अवगत नही कराया हैं।शिक्षक संघ द्वारा मांगी गई मांगों के अंतर्गत जो प्रमुख मांग संविदान्तर्गत कार्यरत शिक्षकों को न्यूनतम वेतन रुपए 57700.00 और उनके ईपीएफ कटौती के संदर्भ में द्वारा पुनः आश्चर्य व्यक्त किया गया कि वर्तमान में कार्यरत सभी अधिकारियों को लगभग 2 वर्ष

विश्वविद्यालय में हो गया और उन्होंने इस संदर्भ में कोई भी कार्य नहीं किया।यह भी अवगत कराया कि विश्वविद्यालय के अंदर किस प्रकार विश्वविद्यालय अध्यादेश पर नियमावली एवं अधिनियम का खुला उल्लंघन किया जा रहा हैं।विश्वविद्यालय में कार्यरत डॉ शिवी श्रीवास्तव के प्रकरण को लेकर उन्होने कहा कि राजभवन अत्यंत गंभीर है क्योंकि राजभवन द्वारा ही पारित निर्णय का अनुपालन विश्वविद्यालय जानबूझ कर नहीं कर रहा है। महिला शिक्षिका को हर स्तर पर प्रताड़ित किया जा रहा है जिसकी वजह से शिक्षिका का स्वास्थ्य प्रभावित हो रहा है और उनका मानसिक एवं आर्थिक नुकसान भी हो रहा है।2021 में कुलाधिपति के द्वारा किए गए निर्णय का अनुपालन भी विश्वविद्यालय द्वारा आज तक नहीं किया गया।मंगलवार को भी धरने का आयोजन किया गया।जिसमें विश्व विद्यालय प्रशासन के लिए बुद्धि शुद्धि यज्ञ का भी आयोजन किया गया।उक्त बुद्धि शुद्धि यज्ञ बड़ी संख्या में शिक्षकों एवं शिक्षिकाओं ने भाग लिया और ऐसी उम्मीद की गई की हो सकता है इस यज्ञ के करने से विश्वविद्यालय प्रशासन की बुद्धि शुद्ध हो सके और वह नियमानुसार निर्णय ले सके। इस मौके पर अध्यक्ष प्रोव शैलेन्द्र वर्मा , महामंत्री डॉ राणा रोहित सिंह , अंशुमान पाठक, त्रिलोकी यादव, आशीष पटेल, विमल यादव , अंकित श्रीवास्तव ,अंकित मिश्रा सहित सभी शिक्षक मौजूद रहे।

मार्निंग वॉक के लिए निकले अपहृत युवक को चार दिन बाद पुलिस ने किया गिरफ्तार

ब्यूरो प्रमुख
विश्व प्रकाश श्रीवास्तव

जौनपुर। सुरेरी थाना अंतर्गत पुलिस द्वारा बीते 19 अक्टूबर से लापता अपहृत युवक सूरज गुप्ता को गिरफ्तार कर लिया गया है। सूरज गुप्ता 19 अक्टूबर को घर से मॉर्निंग वॉक के लिए निकला था और तभी से गायब चल रहा था। पिता ने तहरीर देकर उसके अपहरण होने की प्राथमिक की दर्ज कराई थी इस मामले में लगातार पुलिस सर्विलांस की माध्यम से युवक को खोजने में जुटी थी। युवक के मोबाइल फोन से लगातार व्हाट्सएप पर परिजनों को मैसेज आ रहे थे और 40 लाख रुपए फिरौती की मांग की गई थी। सुरेरी पुलिस टीम द्वारा स्वयं के अपहरण की साजिश कर फिरौती की मांग करने वाले अभियुक्त को किया को सोमवार को गिरफ्तार कर लिया गया है। मामले का मंगलवार को खुलासा करते हुए अपर पुलिस अधीक्षक ग्रामीण शैलेंद्र कुमार सिंह ने बताया कि युवक का अपहरण नहीं किया गया था बल्कि उसने अपने अपहरण की खुद अपहृत होने की सूचना अपने मोबाइल फोन से सिम निकाल कर लगातार वाईफाई के माध्यम से खुद के अपहरण होने की सूचना परिजनों को देते हुए 40 लख रुपए की मांग किया था। सर्विलांस टीम की मदद से युवक को थाना क्षेत्र की गांधी घाट पूल के पास हीरा पट्टी गांव से बरामद कर लिया गया है। इसने परिजनों को गुमराह कर व्हाट्सएप के माध्यम से फिरौती की मांग किया था। इस मामले में अपहृत युवक सूरज गुप्ता पुत्र प्रदीप कुमार गुप्ता निवासी अड़ियार(हनुमानगंज बाजार) थाना सुरेरी के खिलाफ विभिन्न धाराओं में मुकदमा पंजीकृत करते हुए उसे जेल भेजा जा रहा है। इस मामले में युवक सूरज गुप्ता ने बताया कि उसे किसी ने अपहृत नहीं था उसने खुद से अपने निजी काम से अपहरण की सूचना परिजनों को दिया था और खुद ही पैसे की डिमांड किया था हालांकि कुछ स्पष्ट रूप से बात नहीं पा रहा है विदित हो कि इसके पहले भी युवक दो बार इस तरह की घटना को अंजाम दे चुका था। सूरज ने यह भी बताया कि वह इस तरह की साजिश रच कर ये देखना चाहते थे कि किस तरह इसका प्रभाव होता है।

महिला थानाध्यक्ष ने महिलाओ व बालिकाओ को किया सुरक्षा के प्रति जागरुक

अयोध्या। महिला थानाध्यक्ष मंजू देवी ने मिशन शक्ति फेज–5.0 के तहत आर वी इंटर कालेज मे छात्राओ व जिला चिकित्सालय मे महिलाओ को सुरक्षा संबंधित टिप्स दिये। वही केंद्र व राज्य सरकार द्वारा चलाये जा रहे योजनाओ को बताया।इस मौके पर उन्होने महिलाओंध्बालिकाओं को पुलिस की पाठशाला लगाकर नारी सुरक्षा, नारी स्वाबलंबन एवं नारी सम्मान व सुरक्षा के प्रति जागरुक किया।उन्होने बताया कि महिला सशक्तिकरण और सुरक्षा अभियान के तहत मिशन शक्ति के अन्तर्गत पुलिस टीम द्वारा महिलाओं को जागरूक किया जा रहा है।बालिका, छात्रा एवं महिलाओं के साथ घटित होने वाले अपराधों पर प्रभावी रोकथाम हेतु नगर के साथ ही गांवों से लेकर गली, मोहल्ले, शिक्षण संस्थानों में पुलिस की पाठशाला लगाकर बालिकाओं को आत्मनिर्भर बनने हेतु चलाये जा रहे मिशन नारी सुरक्षा, नारी सम्मान, नारी स्वावलंबन के दृष्टिगत सुरक्षा जागरूकता के संबंध में जानकारियां दी गई।उन्होने बताया कि विभिन्न हेल्पलाइन नंबर, महिला हेल्प डेस्क, एंटी रोमियों स्क्वायड, उत्तर प्रदेश सरकार द्वारा महिलाओं एवं बालिकाओं की सुरक्षा, सम्मान व स्वावलम्बन हेतु चलाए जा रहे "मिशन शक्ति फेज–5.0 के तहत आत्मरक्षा पुलिस विभाग से संबंधित विभिन्न हेल्पलाइन नंबरों वीमेन पावर लाइन 1090, पुलिस आपातकालीन सेवा–112 इमरजेन्सी कॉलध्फैनिक बटन–मोबाइल पर डेमो, सी०एम० हेल्प लाइन 1076, स्वास्थ्य सेवा हेल्प लाइन–102, एम्बुलेंस सेवा–108, महिला हेल्प लाईन–181, साइबर सुरक्षा हेल्प लाईन 1930 आदि के बारे मे बैनर, पोस्टर व पंपलेट आदि के माध्यम से विस्तृत जानकारी दी गई। उप निरीक्षक स्वेता राठौर,महिला आरक्षी छाया भदौरिया, शालिनी सहित अन्य महिला पुलिस कर्मी मौजूद रही।

लापरवाही बरतने में बिजली विभाग के उप खंड अधिकारी समेत दो निलंबित

ब्यूरो प्रमुख
विश्व प्रकाश श्रीवास्तव

जौनपुर। पूर्वांचल विद्युत वितरण निगम के प्रबंध निदेशक ने उप खंड अधिकारी संजीव कुमार श्रीवास्तव व कार्यकारी सहायक जितेंद्र कुमार को अनियमितता व दायित्व निर्वहन में घोर लापरवाही के कारण निलंबित कर दिया है।कार्मिक एवं जनसंपर्क अधिकारी संदीप वर्मा ने मंगलवार को जारी पत्र में बताया कि विद्युत वितरण उपखंड चतुर्थ के उपखंड अधिकारी संजीव कुमार श्रीवास्तव व कार्यकारी सहायक जितेंद्र कुमार ने विभाग को आर्थिक हानि पहुंचाने, अपने अधीनस्थों पर प्रभावी नियंत्रण न रखने तथा अपने कर्तव्यों एवं दायित्वों के निर्वहन में घोर लापरवाही बरतने के लिए प्रथमदृष्टया दोषी पाए जाने पर जांच व अनुशासनिक कार्रवाई किए जाने के लिए तत्काल प्रभाव से निलंबित किया गया। उन्होंने बताया कि दोनों आरोपितों द्वारा विल सही करने के नाम पर लाखों रुपये का विभाग को आर्थिक क्षति पहुंचाई है। अपने अधीनस्थों पर प्रभावी नियंत्रण न रखने तथा अपने कर्तव्यों व दायित्वों के निर्वहन में घोर लापरवाही बरतने के लिए प्रथम दृष्ट्या दोषी पाए गए हैं। निलंबन अवधि तक उपखंड अधिकारी संजीव कुमार श्रीवास्तव मुख्य अभियंता (वितरण) आजमगढ़ संबद्ध किया गया है। वहीं जितेंद्र कुमार निलंबन अवधि तक मुख्य अभियंता (वितरण), मिर्जापुर से संबद्ध रहेंगे।

आर्यावर्त बैंक द्वारा स्वच्छता अभियान 4.0 का आयोजन, अध्यक्ष संतोष एस ने झाड़ू लगाकर अभियान को गति दी

ब्यूरो चीफ आर एल पाण्डेय

लखनऊ। स्वच्छ भारत मिशन को प्रोत्साहित करने के उद्देश्य से आर्यावर्त बैंक द्वारा आज स्वच्छता अभियान 4.0 का आयोजन किया गया। बैंक के चेयरमैन श्री संतोष एस ने इस अभियान का नेतृत्व करते हुए प्रधान कार्यालय में झाड़ू लगाकर स्वच्छता के प्रति अपनी प्रतिबद्धता को दर्शाया। यह आयोजन 2 अक्टूबर को बैंक द्वारा वृहद वृक्षारोपण कार्यक्रम के सफल आयोजन के क्रम में किया गया, जिसमें पर्यावरण संरक्षण और स्वच्छता को प्राथमिकता दी गई थी। इस अवसर पर बैंक के वरिष्ठ अधिकारियों में जनरल मैनेजर श्री अरविंद कुमार सिंह और श्री समीर देशपांडे, सहायक महाप्रबंधक श्री पवन वीर सहाय, श्री राज कुमार जोशी, एवं प्रधान कार्यालय के अन्य अधिकारी और कर्मचारी भी सक्रिय रूप से उपस्थित रहे। सभी ने मिलकर कार्यालय परिसर और उसके आसपास के क्षेत्रों की सफाई की और स्वच्छता के महत्व को समाज तक पहुंचाने का संदेश दिया। अध्यक्ष महोदय श्री संतोष एस

ने अपने संबोधन में कहा, स्वच्छता केवल एक अभियान नहीं है, यह हमारी नैतिक और सामाजिक जिम्मेदारी है। यह हमारे स्वास्थ्य और समाज की समृद्धि के लिए अत्यधिक आवश्यक है। हमें इसे अपने जीवन में नियमित रूप से अपनाना चाहिए।ष उन्होंने यह भी बताया कि बैंक की 1367 शाखाएं और 22 क्षेत्रीय कार्यालय इस स्वच्छता अभियान को पूरे क्षेत्र में प्रभावी ढंग से आगे बढ़ा रहे हैं, जिससे समाज में सकारात्मक बदलाव की शुरुआत हो रही है। जनरल मैनेजर श्री अरविंद कुमार सिंह और श्री समीर देशपांडे ने भी इस अवसर पर कहा कि स्वच्छता अभियान के प्रति बैंक की प्रतिबद्धता अडिग है। आर्यावर्त बैंक न केवल वित्तीय क्षेत्र में बल्कि सामाजिक कल्याण के कार्यों में भी सक्रिय रूप से योगदान देता रहेगा, उन्होंने कहा। सभी अधिकारियों और कर्मचारियों ने उत्साहपूर्वक इस अभियान में भाग लिया, जिससे स्वच्छता के प्रति जागरूकता बढ़ाने और समाज में स्वच्छता का संदेश फैलाने में मदद मिली।

लोक निर्माण विभाग में छः माह बाद भी नही जारी हो पायीं नवीन स्वीकृतियां

मृत्युंजय प्रताप सिंह

लखनऊ। लोक निर्माण विभाग उ.प्र. में वर्तमान वित्तीय वर्ष 2024–25 के सापेक्ष कार्य योजना का अन्तिमीकरण अभी तक नही हो सका है। परिणामस्वरूप कार्य योजना के सापेक्ष नवीन स्वीकृतियां भी निर्गत नही हो सकी हैं, जबकि वर्तमान वित्तीय वर्ष में छः माह से अधिक का समय व्यतीत हो चुका है। स्वीकृतियां जारी होने के पश्चात् तकनीकी स्वीकृति, निविदा आमंत्रण एवं अनुबन्ध गठन की प्रक्रिया में भी लगभग दो माह का समय लग जाता है। संघ की तरफ से कहा गया कि विलम्ब से स्वीकृति जारी कर जल्द कार्य का दबाव बनाया जाता है। ऐसे में कार्य की गुणवत्ता प्रभावित होती है फिर अभियंताओं पर बेजा कर्रावाई की जाती है। डिप्लोमा इंजीनियर्स संघ ने छः माह से अधिक समय व्यतीत होने के बावजूद स्वीकृतियां नही जारी करने पर मुख्यमंत्री उ.प्र. सरकार को पत्र लिखा है। संघ ने पत्र विभागीय प्रमुख सचिव एवं प्रमुख अभियंता (विकास) एवं विभागाध्यक्ष को भी पत्र लिखा है। संघ के प्रान्तीय अध्यक्ष इं. एन.डी. द्विवेदी ने पत्र के माध्यम से अवगत कराया है कि स्वीकृतियां जारी होने के पश्चात् तकनीकी स्वीकृति, निविदा आमंत्रण एवं अनुबन्ध गठन की प्रक्रिया में भी लगभग दो माह का समय लग जाता है। माह दिसम्बर एवं जनवरी में तापमान में अतिशय गिरावट होने पर विष्शिटियों के अनुरूप विटुमिनस कार्य सम्पादित नही हो सकता है। स्वीकृतियां विलम्ब से जारी होने पर माह फरवरी एवं मार्च में कार्य का अतिशय दबाव डाला जायेगा। वित्तीय वर्ष में समय कम बचने पर प्रतिकूल मौसम यथा भारी ठंड में भी विष्शिटियों के विपरीत कार्य कराने का दबाव बनाया जाता है।

परिणामस्वरूप गुणवत्ता प्रभावित होने के साथ ही साथ बजट सरेन्डर,लैप्स की भी सम्भावना बनेगी तथा विभाग की छवि धूमिल होगी, जो कि विभागीय हित में नही है। संघ ने मांग की है कि वित्तीय वर्ष 2024–25 के सापेक्ष कार्य योजना के अन्तिमीकरण के साथ ही साथ नवीन स्वीकृतियां यथाशीघ्र जारी करायी जाय। जिससे ससमय विभागीय कार्य गुणवत्ता पूर्वक सम्पादित कराया जा सके तथा जनमानस को उसका लाभ प्राप्त हो सके।

मुख्यमंत्री सामूहिक विवाह के लिए 26 अक्टूबर तक करे आवेदन

हरदोई(अम्बरीष कुमार सक्सेना) मुख्य विकास अधिकारी सौम्या गुरूरानी ने बताया है कि जिला धिकारी के निर्देशानुसार वित्तीय वर्ष 2024–25 में 12, 14, 18 व 23 नवम्बर, 2024 को मुख्यमंत्री सामूहिक विवाह योजनान्तर्गत जनपद में 1928 जोड़ों का विवाह आयोजित किया जाना प्रस्तावित है, जिसमें प्रतिजोड़ा रू0 51,000/– की दर से व्यय होगा, जिसमें कन्या के खाते में रू0 35,000/–, उपहार सामग्री रू0 10,000/– व कार्यक्रम के आयोजन हेतु रू0 6,000/– की धनराशि व्यय होगी। उन्होंने जन सामान्य नागरिकों को सूचित है कि उक्त योजनान्तर्गत गरीब एवं असहाय इच्छुक अपना आवेदक 26 अक्टूबर 2024 तक जनसेवा केन्द्र के माध्यम से विभागीय पोर्टल https://cmsvy.upsdc.gov.in पर आवेदन कर अपने–अपने सम्बन्धित विकास खण्ड/नगर पालिका/नगर पंचायत हरदोई में उपलब्ध कराये। प्राप्त उक्त आवेदन विकास खण्ड/नगर पालिका/नगर पंचायत से प्राप्त सूची/आवेदनों को जांच करने के उपरान्त विवाह हेतु पात्रता की स्वीकृति की कार्यवाही की जायेगी।

लेखपाल संघ बल्दीराय को प्रदेश सरकार घूस लेने का दे अधिकार

सुलतानपुर। एंटी करप्शन टीम द्वारा प्रदेश में लगातार लेखपालों के खिलाफ कार्रवाई होने से असंतुष्ट लेखपाल संघ ने प्रमुख सचिव गृह को संबोधित ज्ञापन एस डी एम तहसील बल्दीराय को सौंपा।कि लेखपालों के खिलाफ कार्रवाई नहीं होनी चाहिए। लेखपालों के घूस लेने का सर्वाधिकार सुरक्षित होना चाहिए। जिससे लेखपाल ग्राम सभाओं की जमीनों से मनमाना धन अर्जित करने में सक्षम रहें।इस प्रकरण पर प्रदेश सरकार को चाहिए कि विधिक सलाहकार से सलाह लेकर लेखपालों को एंटी करप्शन की जांच दायरे से बाहर रखे। लेखपाल एंटी करप्शन जांच से प्रभावित न होने पाएं। क्योंकि लेखपाल 'सुप्रिम कोर्ट' से बड़ा है,लेखपालों को रिश्वत लेने का खुला अधिकार मिले। तभी तो जनता–जनार्दन तहसील समाधान दिवस एवं थाना समाधान दिवस की परिक्रमा करता रहे ।

अधिकारियों की बंदिशें न रहे । लेखपाल की अनलीगल एक विंदी रखने के बाद ,पीड़ित एक विंदी को लेकर मुकदमा लड़ते–लडते थक जाते हैं। लेखपाल के पास स्याह को सफेद एवं सफेद को स्याह करने की पावर सरकार को दे देनी चाहिए।

शासन व प्रशासन को संज्ञान लेने की आवश्यकता है कि मात्र लेखपालों की मनमानी के चलते 70 प्रतिशत जन समस्याएं आज राजस्व भूमि सम्बन्धी मुसीबत बनी है जिससे जनता कोर्ट व पुलिस के चक्कर लगा रही है। लेखपालों की मांग को देखते हुए, जनहित के मद्देनजर सरकार द्वारा ठोस फैसला लिया जाना चाहिए।

केजीएमयू को नहीं होने देंगे संसाधनों की कमी – ब्रजेश पाठक

ब्यूरो चीफ आर एल पाण्डेय

लखनऊ।किंग जॉर्ज चिकित्सा विश्वविद्यालय के रेडियोथेरेपी विभाग में प्रशामक देखभाल इकाई द्वारा सतत चिकित्सा कार्यक्रम का आयोजन किया गया। कार्यक्रम में माननीय उपमुख्यमंत्री ब्रजेश पाठक मुख्य अतिथि के रूप में सम्मिलित हुए। कार्यक्रम की विशिष्ट अतिथि कुलपति केजीएमयू प्रो सोनिया नित्यानंद रही। मुख्य अतिथि के आशीर्वचन – केजीएमयू द्वारा अपनी प्रतिष्ठा एवं परम्परा का निर्वहन किया जा रहा है। राज्य सरकार केजीएमयू के कार्यों से प्रसन्न है एवं हरसंभव सहयोग चाहे वित्तीय हो अथवा प्रशासनिक, केजीएमयू को प्रदत्त करने हेतु कटिबद्ध है। विशिष्ट अतिथि का संबोधन – केजीएमयू राज्य सरकार एवं उपमुख्यमंत्री का बहुत आभारी है। उनके प्रयासों के कारण ही हमें अपने एक्सटेंशन के लिए जमीन प्राप्त हो पाई है। शीघ्र ही रेडियोथेरेपी विभाग में एक नया लीनियर एक्सीलरेटर लगाया जाएगा। प्रो राजेंद्र कुमार – जीव दया फाउंडेशन के सहयोग से वर्ष 2016 में चंससपंजपअम बंतम चतवरमबज की शुरुआत हुई। 5 साल की समयावधि पूरी होने के बाद बपचसं फाउंडेशन द्वारा इसे चलाया जा रहा है। 21000 रोगियों को चिकित्सा सेवा देने के साथ साथ सैंकड़ों रोगियों को मानसिक चिकित्सा, पोषण सुविधा, घाव की देखभाल, सांस और खाने की नली लगवाने में सहायता उपलब्ध कराई जाती है। प्रो शालीन कुमार – बड़ा मुश्किल है मरीज के आखिरी समय की देखभाल। हमारे देश में इच्छामृत्यु कानूनन नहीं है। किन्तु जिन रोगियों में जीवन की संभावना शून्य है उनका उपचार बेहद चुनौतियों से भरा है। तीमारदार से मृत्यु की संभावना की सूचना साझा करते हुए मार्मिक एवं दार्शनिक दृष्टिकोण अपनाना होगा। प्रो संजय धीराज – नारकोटिक्स की दवाएं जैसे अफीम इस प्रकार के रोगियों को उपलब्ध कराई जाती हैं। इसे 2.5 से 5 मिलीग्राम से आरंभ किया जाता है। इसकी खुराक 6 गुना तक बढ़ाई जा सकती है। इसका सबसे अधिक दुष्प्रभाव कब्ज है। उपस्थिति – प्रो विनीत शर्मा, प्रो अपजीत कौर, प्रो राजीव गुप्ता, प्रो अभिनव सोनकर, प्रो संदीप तिवारी, प्रो बीके ओझा, प्रो क्षितिज श्रीवास्तव, प्रो आनंद मिश्रा, प्रो पवित्र रस्तोगी एवं अन्य संकाय सदस्य, धन्यवाद ज्ञापन – प्रो सीमा गुप्ता संचालन – प्रो सुधीर सिंह ने किया।

लंका को धू–धू जलता देख जयकारों से गूँज उठा पंडाल

सुजानगंज, जौनपुर। क्षेत्र के मोहरियाँव गांव में चल रहे आदर्श रामलीला धर्म मंडल समिति के तत्वावधान में चौथे दिन की रामलीला में राम सुग्रीव मिलन, बाली बध, हनुमान जी का लंका जाना, लंका दहन का हुआ मंचन। रामलीला मंचन में समुंद्र के किनारे जामवंत, हनुमान वानरी सेना के साथ खड़े रहते है तो जामवंत ने हनुमान के बाल्यकाल की ताकत का एहसास दिलाया तो हनुमान जी जय श्री राम का जयकारा लगाकर समुद्र को पर करके लंका के लिए चल देते है। और लकिनी और विभीषण से मुलाकात हुई फिर अपनी भूख को मिटाने के लिए अशोक वाटिका पहुंचे हनुमान जी ने वहाँ लगे पेड़ पौधे उखाड़ने लगे तो इसकी सूचना रख वालों ने रावण को दी मेघनाथ

ने हनुमान जी को ब्रह्म फाँस में बांधकर दरबार में ले आए रावण के आदेश पर हनुमान जी की पूंछ में आग लगा दी गई हनुमान जी ने पूंछ में आग लगते ही हनुमान ने सोने की पूरी लंका में आग लगा दी लंका धू–धू कर जलने लगी और वह कुछ ही देर में जलकर राख हो गई यह दृश्य देख प्रभु श्री राम व पवनसुत हनुमान की जय कारों से रामलीला मैदान गूंज उठा।

इस अवसर पर विशंभर नाथ दुबे, भास्कर मणि तिवारी,राम जी पांड़े, पवन गुप्ता, मयंक मिश्र, सोनू तिवारी, कार्तिकेय विश्वकर्मा, मेकअप मैन मोनू विश्वकर्मा,शुभम चौबे, बड़े चौबे, मोहम्मद सैफ और कैब आदि प्रमुख रूप से उपस्थित रहे।

गत चार वर्षों की तुलना मे इस वर्ष डेंगू से संक्रमित अब तक मिले सबसे कम मरीज - सीएमओ

पिछले वर्ष कुल 1002 मिले थें डेंगू सें पीडित मरीज

अयोध्या। डेंगू जैसे गंभीर बीमारी से अगर छुटकारा पाना है तो स्वच्छता रखना बहुत जरुरी है।डेंगू फैलने के कारण,लक्षण व बचने की उपाय की जानकारी से ही लोग इस तरह के गंभीर रोग से बच सकते है। स्वास्थ्य

विभाग मे तैनात जिला सर्विलांस अधिकारी वेद प्रकाश त्रिपाठी जिला एपीडीमियोलॉजिस्ट (संक्रामक रोग) डाक्टर अरविंद श्रीवास्तव द्वारा अधिकतर स्थानो पर कैंप लगाकर व बैनर पोस्टर के माध्यम से लोगो को जागरुक किया जा रहा है। यह बाते मुख्य चिकित्साधिकारी डाक्टर संजय जैन ने कही।उन्होने बताया कि जिसका नतीजा यह रहा कि पिछले चार वर्षो की तुलना में अब तक सबसे कम डेंगू के मरीज मिले है। उन्होने बताया डेंगू से सबसे अधिक मरीज पिछले वर्ष 2023 मे लगभग कुल 1002 चिन्हित किये गये थे। जिसमे पिछले वर्ष अकेले अक्टूबर माह मे लगभग 379 इस रोग से मरीज चिन्हित किये गये थे। वही इस वर्ष 2024 मे जनवरी से अब तक लगभग कुल 290 डेंगू से पीडित मरीज मिले है। जबकि इससे ज्यादा इस रोग से पीडित मरीज केवल पिछले वर्ष अक्टूबर माह मे लगभग 390 चिन्हित किये गये थे।उन्होने बताया कि जबकि वर्ष 2021 मे लगभग 570 व वर्ष 2022 में लगभग 667 डेंगू से पीडित मरीज पाये गये।उन्होने बताया कि लोगो को इस रोग से बचने के लिये स्वास्थ्य विभाग के अधिकारियो व कर्मियो को जागरुक किया जा रहा है।उन्होने लोगो से अपील किया कि सभी लोग स्वच्छता की ओर विशेष ध्यान दे।कूलर व अन्य बर्तनो आदि प्लास्टिक के बोतलो मे गंदा पानी न इक्ट्ठा होने दे।सामने गंदगी न रहने दे व नाली का गंदे जल न इक्ट्ठा होने दे।

पुलिस स्मृति दिवस पर शहीद जवानों को नमन कर दो मिनट का मौन रखा गया

वाराणसी, संवाददाता। वाराणसी के पुलिस लाइन मैदान में पुलिस स्मृति दिवस मनाया गया। इस दौरान अपनी ड्यूटी और फर्ज को निभाते हुए शहीद होने वाले जवानों को याद किया गया। पुलिस आयुक्त मोहित अग्रवाल ने कर्तव्य की बेदी पर अपने प्राणों की आहुति देने वाले अमर वीर शहीदों को याद करते हुए पुष्प चक्र अर्पित किए। मौके पर राज्यमंत्री रवीन्द्र जायसवाल व दयाशंकर मिश्र दयालु, जिला पंचायत अध्यक्ष पूनम मौर्या, अपर पुलिस महानिदेशक वाराणसी जोन पीयूष मोर्डिया, आयुक्त वाराणसी मंडल कौशल राज शर्मा, संयुक्त पुलिस आयुक्त मुख्यालय एवं अपराध डॉ. के एजिलरसन और पुलिस महानिरीक्षक मोहित गुप्ता मौजूद रहे। पुलिस आयुक्त मोहित अग्रवाल ने कहा कि 21 अक्टूबर 1959 को भारत की उत्तरी सीमा पर लद्दाख की चोटियों में सजग प्रहरियों के रूप में ड्यूटी करते हुए हमारे केन्द्रीय रिजर्व पुलिस बल के 10 जवानों ने चीनी सैनिकों के अचानक हुए हमले में मातृ–भूमि की रक्षा करते हुए अपने प्राणों की आहूति दी थी। उन्हीं वीर जवानों की याद में प्रत्येक वर्ष 21 अक्टूबर को सम्पूर्ण भारत के पुलिस जन वीरगति को प्राप्त हुए अपने साथियों को श्रद्धांजलि अर्पित करते हैं। उल्लेखनीय है कि दिनांक 01.09.2023 से 31.08.2024 तक की अवधि में सम्पूर्ण भारत वर्ष में 216 पुलिसजनों ने कर्तव्य की बेदी पर अपने जीवन की आहुति दी। उत्तर प्रदेश पुलिस के 02 साथी आरक्षी सचिन राठी जनपद कन्नौज एवं आरक्षी रोहित कुमार जनपद प्रतापगढ़ ने नागरिक सेवा में अपना सर्वोच्च बलिदान दिया है। उत्तर प्रदेश के समस्त पुलिस जन इनके महान कर्तव्य पालन व अप्रतिम बलिदान की सराहना में नतमस्तक हैं और अपनी हार्दिक श्रद्धांजलि अर्पित करते हैं। पुलिस लाइन्स के विशेष सशस्त्र जवानों ने शोक सलामी दी और 2 मिनट का मौन रखा गया।

जिलाधिकारी ने प्राथमिक विद्यालय का औचक निरिक्षण कर जाना शिक्षा का हाल

मऊ, संवाददाता। खबर मऊ जिले से है। यहां जिलाधिकारी प्रवीण मिश्र ने सोमवार को नगर क्षेत्र स्थित प्राथमिक विद्यालय सहादतपुरा का औचक निरीक्षण किया। इस दौरान उन्होंने प्राथमिक विद्यालय के समस्त कक्षाओं में बच्चों से संवाद किया। बच्चों से किताबें पढ़वाने के साथ ही उनसे गणित के सवाल भी ब्लैक बोर्ड पर हल करवाया। इसके अलावा जिलाधिकारी ने एक्टिविटी के माध्यम से अध्यापिका से कक्षा शिक्षण भी करवाया। बच्चों को प्रोत्साहित भी किया। जिलाधिकारी ने निरीक्षण के दौरान बच्चों से पहाड़ा भी सुना। पहाड़ा सही सुनाने पर बच्चों को शाबाशी दी। जिलाधिकारी ने गंदगी से फैलने वाले बीमारियों, जल जनित बीमारियों के संबंध में जानकारी लेते हुए उन्हें बच्चों के साथ साझा किया। निरीक्षण के दौरान सभी अध्यापक, अध्यापिकाएं, शिक्षामित्र उपस्थित पाए गए। इस दौरान उन्होंने एमडीएम के लिए तैयार होने वाले भोजन का भी निरीक्षण किया। रसोइयों को साफ सफाई का विशेष ध्यान देने को कहा। उन्होंने अध्यापकों को निपुण भारत के तहत कक्षा एक से तीन तक के बच्चों को निपुण बनाने के लिए विशेष प्रयास करने को कहा। बच्चों की उपस्थिति बढ़ाने में ग्राम प्रधान तथा एसएमसी के सदस्यों का सहयोग लेने के साथ ही शिक्षक अभिभावक बैठक के दौरान इस पर चर्चा कर कार्य करने को कहा।

वाटर स्पोर्ट्स का हब बनेगा रामगढ़ताल

गोरखपुर, संवाददाता। दशकों तक उपेक्षित रहा गोरखपुर का रामगढ़ताल योगी सरकार द्वारा किए गए कायाकल्प के बाद वाटर स्पोर्ट्स का हब बनने लगा है। पिछले साल खेलो इंडिया यूनिवर्सिटी गेम्स के तहत रोइंग की राष्ट्रीय प्रतियोगिता की सफल मेजबानी करने के बाद यहां सब जूनियर नेशनल रोइंग चौंपियनशिप होने जा रही है। 22 से 26 अक्टूबर तक होने वाली इस चौंपियनशिप में रेस कोर्स का उद्घाटन 22अक्टूबर को होगा जबकि खिलाड़ियों के बीच प्रति स्पर्धा का शुभारंभ 23 अक्टूबर को खेल मंत्री गिरीश चंद्र यादव की उपस्थिति में होगा। 26 अक्टूबर को चौंपियनशिप के समापन अवसर पर मुख्यमंत्री योगी आदित्यनाथ का सानिध्य प्राप्त होगा। सब जूनियर नेशनल रोइंग चौंपियनशिप में 20 राज्यों की टीमें प्रतिभाग कर रही है। इसमें कुल 243 खिलाड़ी शामिल होंगे। इन खिलाड़ियों के साथ 43 कोच भी हैं। खिलाड़ियों, कोच, सपोर्टिंग स्टाफ, निर्णायकों और अतिथियों के लिए शहर के होटलों और वाटर स्पोर्ट्स कॉम्प्लेक्स में 106 कमरे रिजर्व किए गए हैं। प्रतियोगिता को लेकर रामगढ़ताल में लेन कोर्स तैयार कर लिया गया है। उल्लेखनीय है कि वाटर स्पोर्ट्स की गतिविधियों को बढ़ाने के लिए ही योगी सरकार ने रामगढ़ताल के समीप विश्व स्तरीय वाटर स्पोर्ट्स कॉम्प्लेक्स का निर्माण कराया है। पिछले वर्ष मई माह में हुई खेलो इंडिया यूनिवर्सिटी गेम्स की रोइंग प्रतियोगिता के बाद जर्मनी से 20 रोइंग बोट्स मंगाकर यहां प्रशिक्षण का कार्य पहले से जारी है। अब सब जूनियर नेशनल रोइंग चौंपियनशिप की मेजबानी के बाद वाटर स्पोर्ट्स की संभावना और परवान चढ़ेगी। खेलो इंडिया यूनिवर्सिटी गेम्स रोइंग प्रतियोगिता ने वाटर स्पोर्ट्स के लिए रामगढ़ताल की उपयोगिता को पहले ही सिद्ध कर दिया है। देशभर के अलग –अलग राज्यों के विश्वविद्यालयों से आए खिलाड़ी, उनके कोच और रोइंग फेडरेशन आफ इंडिया के पदाधिकारी भी हैरत में थे कि वाटर स्पोर्ट्स के लिए समूचे उत्तर भारत के लिए महत्वपूर्ण यह वेन्यू लाइमलाइट में नहीं था।

यूपी रोइंग एसोसिएशन के सचिव सुधीर शर्मा का कहना है कि गोरखपुर के रामगढ़ताल में रोइंग की दूसरी बार राष्ट्रीय प्रतियोगिता होने से जलक्रीड़ा खिलाड़ियों का सपना साकार हो रहा। अंतर विश्वविद्यालय के बाद सब जूनियर नेशनल रोइंग चौंपियनशिप से अंतरराष्ट्रीय स्पर्धाओं के द्वार भी खुलेंगे। श्री शर्मा के मुताबिक मुख्यमंत्री योगी आदित्यनाथ ने रामगढ़ताल का ऐसा कायाकल्प कराया है कि कि आने वाले समय मे यह वाटर स्पोर्ट्स का बेस्ट डेस्टिनेशन बनेगा।

भाई के साथ लूडो खेलने के बाद युवक ने फांसी लगाकर दी जान

प्रयागराज, संवाददाता। कोरांव थाना क्षेत्र के पथरा नारि गांव में बीती रात संदिग्ध परिस्थितियों में एक युवक ने फांसी लगाकर जान दे दी। उसकी शादी दो वर्ष पहले हुई थी। वह डेढ़ माह पहले मुंबई से आया था। घटना की रात आत्महत्या के पहले वह अपने भाई के साथ लूडो खेल रहा था। इसके बाद उसने घर के पीछे जाकर बबूल के पेड़ में फंदा लगाकर खुदकुशी कर ली। घटना से परिवार के लोग सदमे में हैं। समरजीत जीतू (26) पुत्र सोमनाथ भारतीय का शव घर के पीछे बबूल के पेड़ से लटका मिला। भाई सुशील कुमार ने बताया कि रात्रि में दो बजे तक हम दोनों भाई लूडो खेल रहे थे। उसके बाद अपने–अपने कमरे में सोने चले गए। सुबह चार बजे भोर मां जगी और बाथरूम के लिए पीछे गई तो देखा कि जीतू बबूल के पेड़ में रस्सी का फंदा लगाकर लटका हुआ था। मां के शोर मचाने पर सभी लोग जगे तो देखा कि जीतू पेड़ से लटका हुआ था।

जीतू की शादी दो वर्ष पूर्व मिर्जापुर के तिवारीपुर गांव में मनीषा के साथ हुई थी। मृतक की पत्नी मनीषा इस समय मायके में ही थी। जीतू मुंबई में रहकर किसी प्राइवेट कंपनी में काम करता था। डेढ़ माह पूर्व घर आया था। इस घटना से परिजनों में कोहराम मच गया। मां जय पत्ती ने रोते बिलखते बताया कि सोमवार को जीतू पत्नी को बुलाने ससुराल जाने वाला था। मामले की सूचना कोरांव पुलिस को दी गई। मौके पर पहुंची पुलिस ने शव को फंदे से नीचे उतारा और पंचनामा कर पीएम के लिए भेज दिया।

प्रेमी से शादी करने पति के साथ थाने पहुंची महिला

प्रयागराज, संवाददाता। करवाचौथ पर रविवार को घूरपुर थाने में एक अजीबोगरीब मामला सामने आया। एक विवाहिता अपने प्रेमी के साथ शादी की जिद को लेकर पति के साथ घूरपुर थाने पहुंच गई। यहां महिला की जिद को देखते हुए पति ने उसको प्रेमी के साथ शादी की इजाजत दे दी।

इसके बाद थाने के पास मंदिर में प्रेमी और महिला की शादी की तैयारी चल रही रही थी। इस बीच प्रेमी का पिता मौके पर पहुंचा और उसे नाबालिग बताते हुए शादी रुकवा दी। थाने में एक बार पंचायत शुरू हुई तो देर शाम तक चलती रही।रविवार दोपहर बाद थाना क्षेत्र के एक गांव की विवाहिता अपने प्रेमी और पति के साथ घूरपुर थाने पहुंची। वह प्रेमी से शादी कराने की जिद करने लगी। पत्नी की जिद को देखते हुए पति ने भी उसकी बात पर सहमति जताई। सबकुछ जानने समझने के बाद पुलिस ने उन्हें मंदिर में जाकर शादी करने की स्वीकृति दे दी। महिला के साथ आए लोग प्रेमी से उसकी शादी कराने की तैयारी कर ही रहे थे कि प्रेमी का पिता थाने पहुंच गया।

उसने अपने बेटे को नाबालिग बताते हुए शादी रुकवा दी। घूरपुर थाने में पुलिसकर्मी देर रात तक युवती और उसके प्रेमी को समझाने का प्रयास कर रहे थे, लेकिन प्रेमी का पिता शादी कराने को तैयार नहीं हो रहा था। थानाध्यक्ष घूरपुर केशव वर्मा ने कहा कि जो भी न्याय संगत होगा उसी के तहत कार्रवाई की जाएगी। घटना क्षेत्र में चर्चा का विषय बनी हुई है।

पत्नी ने रखा करवा चौथ का व्रत, पति ने मारपीट कर किया घायल- खुद पानी पीकर तोड़ा व्रत

देवरिया, संवाददाता। भीमपुर गांव में पति की दीर्घायु के लिए जिस महिला ने पूरे दिन करवा चौथ का व्रत रखा वहीं घर पहुंचे पति ने किसी बात को लेकर उसकी पिटाई कर दी। डंडे से मारकर उसे घायल कर दिया। महिला ने स्वयं पानी पीकर व्रत तोड़ा। इसके बाद डायल 112 पर फोन कर पुलिस बुलाई। पुलिस ने उसके पति को हिरासत में ले लिया। महिला बेटियों के साथ मायके चली गई। कोतवाली थाना क्षेत्र के भीमपुर की रहने वाली सुशीला देवी अपने पति संतोष चौहान की दीर्घायु के लिए रविवार को करवा चौथ व्रत रखी थी। शाम को चांद निकलने के साथ ही पूजा, अर्चन के बाद पति के दीदार का इंतजार कर रही थी। इसी बीच किसी बात को लेकर पति नाराज हो गया। अपशब्द

कहते हुए डंडे से पत्नी सुशीला की पिटाई शुरू कर दी। मां के चीख पुकार से उसे बचाने के लिए पहुंची बेटियां श्रुति व प्रीति को भी नहीं बख्शा, उन दोनों को भी मारापीटा। जिससे तीनों घायल हो गईं। महिला ने डायल 112 पर फोन कर पुलिस को बुला ली और अपनी आप बीती बताई। पुलिस मौके से पति को हिरासत में लेकर कोतवाली चली आई। उधर महिला रात में अपने पिता के साथ दोनों बेटियों को लेकर बरहज थाना क्षेत्र के गोपवापार गांव स्थित अपने मायके चली गई। सुबह अपने पिता व मां के साथ कोतवाली पहुंची और पति के खिलाफ तहरीर देकर कार्रवाई की मांग की। मामले को गंभीरता से लेते हुए पुलिस ने तीनों का इलाज सीएचसी में कराया। हालांकि देर शाम तक रिपोर्टिंग चौकी में दोनों पक्ष के बीच बातचीत के बाद संतोष चौहान का शांति भंग में चालान कर दिया गया। कोतवाल टीजे सिंह ने बताया कि महिला ने तहरीर दी है। घायलों का इलाज कराया गया है। मामला पति–पत्नी से जुड़ा है, दोनों पक्ष आपस में बातचीत कर रहे हैं।

रेल कर्मचारी ने ब्रिज से लगाई छलांग, मौत हुई

प्रयागराज, संवाददाता। रेलवे विभाग में ऑफिस सुपरिटेंडेंट के पद पर कार्यरत कर्मचारी सतीश कुमार त्रिपाठी (34) पुत्र रामबोध त्रिपाठी ने फाफामऊ के कर्जन ब्रिज से छलांग लगा दी। पुलिस उन्हें अस्पताल ले जा रही थी कि रास्ते में उनकी मौत हो गई। परिवार के लोग भी उनके इस कदम से हैरान हैं। पुलिस ने शव को पोस्टमार्टम के लिए भेज दिया है। फाफामऊ थाना क्षेत्र के प्रसिद्ध का पूरा निवासी सतीश कुमार त्रिपाठी सूबेदारगंज रेलवे ऑफिस में सुपरिटेंडेंट के पद पर काम करते थे। वह सोमवार को सुबह ड्यूटी जाने के लिए घर से निकले थे। फाफामऊ कर्जन पुल पर बाइक खड़ी करके नीचे कूद गए। यह देख पुल पर से गुजर रहे लोगों ने शोर गुल मचाना शुरू कर दिया। घटना की जानकारी पुलिस को भी दी गई। बालू में गिरने से वह गंभीर रूप से घायल हो गए। पुलिस ने उन्हें अस्पताल में ले जा रही थी। रास्ते में ही उनकी मौत हो गई। इसकी सूचना परिजनों को दी गई। रोते बिलखते परिजन मौके पर पहुंचे। वह पांच भाई और एक बहन में चौथे नंबर पर थे। पत्नी सीटू त्रिपाठी को एक वर्ष पूर्व जुड़वा बेटे पैदा हुए हैं। पत्नी का रो–रोकर बुरा हाल हो रहा है। परिजन मौत का कारण नहीं बता पा रहे हैं।

वीआईपी की सुरक्षा में स्नाइपर, एनएसजी के कमांडो होंगे तैनात, एटीएस, एसटीएफ भी रखेगी पैनी नजर

प्रयागराज, संवाददाता। महाकुंभ–2025 में विशिष्ट मेहमानों, श्रद्धालुओं की सुरक्षा के लिए स्नाइपर व एनएसजी कमांडो भी तैनात रहेंगे। थल के साथ ही जल में भी इनकी तैनाती की जाएगी। इसके साथ ही एटीएस व एसटीएफ भी निगहबानी करेंगी। शहर भर में सुरक्षा के लिए 26 एएस चेक टीमें भी लगाई जाएंगी। एनएसजी की दो टुकड़ियां और 26 एएस चेक (एंटी सबोटाज) टीमें पूरे मेला क्षेत्र में तैनात की जाएंगी। इसके अलावा एटीएस कमांडो की चार और एसटीएफ की तीन इकाइयां भी मेल में तैनात रहेंगी। बम निरोधक दस्ते की छह टीमें भी मुस्तैद रहेंगी। विशिष्ट अतिथियों की सुरक्षा के लिए 20 स्नाइपर, तीन स्निफर डॉग की व्यवस्था भी की जा रही है। इसके साथ ही 30 स्पॉट टीमों को भी मुस्तैद किया जाएगा। महाकुंभ मेला एसएसपी राजेश द्विवेदी ने बताया कि कई देशों के राजनयिक महाकुंभ में शिरकत करेंगे। ऐसे में एंटी ड्रोन सिस्टम का इस्तेमाल किया जाएगा। वहीं, मेला क्षेत्र में कई जगह चेकपोस्ट बनाए जाएंगे। यह मेला क्षेत्र के सभी एंट्री, एग्जिट प्वाइंट, पार्किंग स्थल, प्रमुख मंदिर समेत अन्य स्थानों पर होंगे। जल में सुरक्षा के लिए उत्तराखंड पीएसी की दो टुकड़ियों को संगम पर तैनात किया जाएगा। दरअसल, उत्तराखंड की पीएसी की यह टुकड़ी पानी के अंदर की गतिविधियों को बारीकी से समझती है और इसके जवान काफी एक्सपर्ट भी होते हैं, इसलिए इन्हें संगम के पास तैनात किया जाएगा। इस टीम में एक डीएसपी, चार इंस्पेक्टर, 20 सब इंस्पेक्टर, 35 हेड कांस्टेबल और 65 कांस्टेबल होंगे।

गोरक्षनाथ शोधपीठ में संचालित होंगे योग के पाठ्यक्रम

गोरखपुर, संवाददाता। दीनदयाल उपाध्याय गोरखपुर विश्वविद्यालय में संचालित होने वाले योग से जुड़े पाठ्यक्रम अब महायोगी गुरुश्री गोरक्षनाथ शोधपीठ में संचालित किए जाएंगे। पाठ्यक्रम के बेहतर संचालन को लेकर विश्वविद्यालय प्रशासन ने यह निर्णय लिया है। इसका आदेश और दिशा–निर्देश जल्द जारी हो जाएगा। निर्णय को इसी सत्र से लागू करने की तैयारी है। वर्तमान में विश्वविद्यालय में पीजी डिप्लोमा इन योग और एमए इन योग पाठ्यक्रम संचालित होते हैं। इन दोनों पाठ्यक्रमों की पढ़ाई दर्शनशास्त्र विभाग में होती है। पाठ्यक्रम का संचालन भी विभाग की ओर से किया जाता है। इसके अलावा नाथ पंथ एवं दर्शन नाम से दो क्रेडिट का एक क्षमता विकास पाठ्यक्रम स्नातक प्रथम सेमेस्टर का हिस्सा है। इसके संचालन की जिम्मेदारी गुरुश्री गोरक्षनाथ शोधपीठ की है। बीते दिनों कुलपति प्रो. पूनम टंडन जब विभिन्न कार्यक्रमों में हिस्सा लेने के लिए शोधपीठ गईं तो उन्होंने योग के सभी पाठ्यक्रमों के संचालन के लिए उसे उपयुक्त पाया और इसे लेकर अनौपचारिक रूप से निर्णय भी ले लिया। उसी निर्णय को अब औपचारिक रूप देने की योजना तैयार हो चुकी है। ऐसा होने के बाद दर्शनशास्त्र विभाग इन पाठ्यक्रमों में शैक्षिक सहयोगी की भूमिका निभाएगा। शोधपीठ के उप निदेशक डॉ. कुशल नाथ मिश्र ने बताया कि पीठ में योग के विविध कार्यक्रम संचालित किए जाने की संपूर्ण व्यवस्था है क्योंकि गोरक्षपीठ मूलतरू योग की पीठ है।

कुलपति डीडीयू प्रो पूनम टंडन ने बताया कि बहुत जल्द दर्शनशास्त्र विभाग से संचालित होने वाले पीजी डिप्लोमा इन योग और एमए इन योग पाठ्यक्रम के संचालन की जिम्मेदारी गुरुश्री गोरक्षनाथ शोधपीठ को सौंप दी जाएगी। इस संबंध में निर्णय ले लिया गया है।

संक्षिप्त खबरें

कमरे में सो रही बालिका को सांप ने डसा, मौत

सुल्तानपुर। सांप डसने से बालिका की मौत,सोते समय डसा।बीती रात कमरे में सो रही नौ वर्षीय बालिका को सांप ने डसा,हुई मौत। बेटी की मौत की खबर सुनते ही परिजन में चीख पुकार मच गई। उधर सूचना मिलने के बाद थाना पुलिस भी मौके पर आ गई। बालिका के शव को पोस्टमार्टम के लिए भेजा। हादसे के बाद परिजन का रो–रोकर बुरा हाल है।

स्ववित्त पोषित कालेजों के संविदा शिक्षक करा सकेंगे शोध

गोरखपुर, संवाददाता। दीनदयाल उपाध्याय गोरखपुर विश्वविद्यालय में अब स्ववित्त पोषित पाठ्यक्रम और अनुदानित कॉलेजों के स्व–वित्तपोषित पाठ्यक्रम के संविदा शिक्षक भी शोध कराएंगे। विश्वविद्यालय प्रशासन ने उन्हें सह–शोध निर्देशक बनाने का न केवल निर्णय लिया है, बल्कि इसके लिए दिशा–निर्देश भी जारी कर दिया है। शोध, नवाचार और शैक्षणिक उत्कृष्टता को प्रोत्साहित करने के लिए विश्वविद्यालय की ओर से यह महत्वपूर्ण निर्णय लिया गया है। इस निर्णय के पीछे विश्वविद्यालय एक अन्य उद्देश्य शोध के दायरे को बढ़ाना और संबद्ध संस्थानों के शिक्षकों व विद्यार्थियों में अनुसंधान की ललक जगाना है। शोध को लेकर यह निर्णय नए पीएचडी अध्यादेश के उस नियम के तहत लिया गया है, जिसमें यह व्यवस्था दी गई है कि विभागीय शोध समिति से अनुमोदन प्राप्त होने के बाद संविदा पर कार्य कर रहे शिक्षकों को सह–शोध निर्देशक बनाया जा सकता है। विभागीय अनुसंधान समिति संविदा शिक्षकों को सह–शोध निर्देशक बनाने से पहले शोध अध्यादेश के मानक पर उनकी पात्रता का मूल्यांकन करेगी। पात्र पाए जाने पर अपनी अनुशंसा शोध व विकास प्रकोष्ठ को भेजेगी। प्रकोष्ठ अनुशंसा प्राप्त शिक्षक को सह–शोध निर्देशक बनाने की संस्तुति देगा और उनका नाम संबंधित विभाग में भेजेगा। विभाग यह निर्णय लेगा कि उन्हें किस शोध छात्र का सह–शोध निर्देशक बनाना है। संविदा शिक्षकों को सह–शोध निर्देशक बनाने की अंतिम स्वीकृति कुलपति की ओर से दी जाएगी।

कोचिंग जा रही छात्रा से छेड़छाड़, विरोध पर मारपीट

गोरखपुर, संवाददाता। सहजनवां थाना क्षेत्र के एक गांव की 13 वर्षीय किशोरी निजी विद्यालय में कक्षा पांचवीं की छात्रा है। सुबह वह साइकिल से चौराहे पर स्थित कोचिंग सेंटर में पढ़ने जा रही थी। रास्ते में पड़ोस के गांव का युवक उसे अकेला देखकर छेड़छाड़ करने लगा। उसने चौराहे पर पहुंचकर घटना की जानकारी परिजनों को दी। उलाहना देने बाद वह अपनी दुकान पर पहुंचे तो करीब 20 की संख्या में आरोपी के परिजन आ गए। उन्होंने गाली देने के साथ मारपीट की। पीड़िता के चाचा ने आरोपी युवक सहित करीब दो दर्जन अज्ञात के खिलाफ शिकायत दर्ज कराई है। पुलिस मामले की जांच कर रही है। पुलिस का कहना है कि जांच के बाद केस दर्ज किया जाएगा।

खरीदारी के लिए निकली महिला की सड़क हादसे में मौत

, संवाददाता। क्षेत्र के सिहोरिया की रहने वाली एक महिला रविवार को दोपहर बाद करवा चौथ का सामान लेने गई थी। लेकिन सड़क हादसे में उसकी मौत हो गई। साथ में बाइक चालक आदित्य गुप्ता को गंभीर चोट आई हैं। जिसे सीएचसी पिपराइच से मेडिकल कॉलेज रेफर कर दिया गया। पुलिस ने शव को कब्जे में लेकर पोस्टमॉर्टम के लिए भेज दिया। जानकारी के अनुसार, थाना क्षेत्र के ग्राम सिहोंरिया निवासी अनर जीत यादव की 45 वर्षीय पत्नी कुसमावती करवा चौथ का सामान खरीदने के लिए बगल के युवक के साथ बाइक से बाजार गई थी। कोनी हाईवे पर पीछे से आ रही कार ने बाइक में जोरदार ठोकर मार दी। इसमें दोनों गंभीर रूप से घायल हो गए। सूचना पर पहुंची पुलिस ने ग्रामीणों के सहयोग से दोनों को सीएचसी पिपराइच भेजवाया। वहां डॉक्टरों ने महिला को मृत घोषित कर दिया। जबकि युवक को मेडिकल कॉलेज रेफर कर दिया।

प्रशासनिक छापे से मचा हड़कंप, अवैध अल्ट्रासाउंड सेंटर

बलिया, संवाददाता। बलिया के बांसडीह में बिना रजिस्ट्रेशन के अल्ट्रासाउंड सेंटर का संचालन व लिंग परीक्षण की शिकायत पर सोमवार को डाक बंगला के समीप दो अल्ट्रासाउंड सेंटरों व एक क्लिनिक पर तहसीलदार बांसडीह निखिल शुक्ला ने मेडिकल आफिसरों की टीम के साथ छापेमारी की। जांच के बाद मानक विहिन मिलने पर तीनों सेंटरों को सील कर दिया। छापेमारी की खबर पर अवैध रूप से संचलित जांच केन्द्र, निजी अस्पताल व क्लिनिक धड़ाधड़ शटर गिराकर फरार हो गये।

उपजिलाधिकारी अभिषेक प्रियदर्शी को शिकायत मिली थी कि गलत अल्ट्रासाउंड केंद्रों का संचालन हो रहा है। सेंटरों में चंद पैसा कमाने के चक्कर में गर्भवती महिलाओं का लिंग परीक्षण किया जा रहा है। एसडीएम ने तहसीलदार निखिल शुक्ला को जांच की जिम्मेदारी दी। तहसीलदार के साथ चिकित्सा अधीक्षक बांसडीह डा. बिंकटेश मौआर व नायब तहसीलदार सुधांशु श्रीवास्तव ने पुलिस टीम के साथ दो अल्ट्रासाउंड पर छापेमारी कर जांच किया तो उक्त केंद्रों में कुछ भी नियमानुसार नहीं मिला।

सान्ध्य हिन्दी दैनिक देश की उपासना

स्वात्वाधिकारी में. प्रभुदयाल प्रकाशन की ओर से श्रीमती किरन देवी श्रीवास्तव मुद्रक, प्रकाशक एवं सम्पादक द्वारा देश की उपासना प्रेस, उपासना भवन, धर्मसारी, प्रेमापुर, जौनपुर उत्तर प्रदेश से मुद्रित एवं प्रकाशित।

सम्पादक
श्रीमती किरन देवी श्रीवास्तव

मो0 - 7007415808, 9628325542, 9415034002
RNI NO - UPHIN/2022/86937
Email - deshkiupasanadailynews@gmail.com

समाचार–पत्र से संबधित समस्त विवादों का न्याय क्षेत्र जौनपुर न्यायालय होगा।